Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य जनता का
प्रतिनिधि मासिक

"ओ३म्"

जन ज्ञान

मूल्य ५० पैसे

वर्ष १ : अंक ३

१५ जुलाई, १९६८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य संन्यासी स्वामी अखिलानन्द-जी का आदेश

जन जन में "ज्ञान" फैलाइए !

'ज्ञान' बिना धरती प्यासी है, अंधकार छाया है, मनुष्य पशु बनता जा रहा है मृत्यु सिर पर नाच रही है। जीवन के लिए उसे "ज्ञान" चाहिए।

मनुष्य मात्र के हृदय और मस्तिष्क को ज्ञान देना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। जो इसे पूरा करे, उसका जन्म सफल है।

आर्य समाज की स्थापना इसी पावन उद्देश्य से हुई थी। किन्तु धीरे धीरे हम लक्ष्य से दूर होते गए। ज्ञान से दूर भटककर सत्य-धर्म को भूल, ईर्ष्या द्वेष और फूट पिशाचिनी के द्वार पर जा खड़े हुए।

'ज्ञान' पता नहीं कहां गया····· भारतेन्द्रनाथ जी ने साधन न होते हुए भी जन-जन तक ज्ञान, सत्य, और प्रभु का पावन संदेश, 'वेद' का प्रकाश फैलाने का संकल्प लिया है। मेरी हार्दिक कामना है कि वे सफल हों, 'वेद' की गौरव गरिमा से सभी को परिचित कर उस पर मानव मात्र को चलाने के लिए ही महर्षि. दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी। किन्तु आज तो 'वेद' संदेश फैलाने की बात कोई सोचता भी नहीं।

जो सोचते हैं उन्हें सहयोग मिलना ही चाहिए, मिलेगा भी। प्रभु का आशीर्वाद तो उनके साथ है ही·····जनता का प्यार भी उन्हें मिलेगा, ऐसा विश्वास है।

'जन-ज्ञान' को मेरा आशीर्वाद·····संचालकों को बधाई·····

—अखिलानन्द सरस्वती

- संसार के प्रत्येक व्यक्ति तक 'वेद' का पावन संदेश फैलाने के लिए 'जन-ज्ञान' के सदस्य बनिए।
- 'आर्य समाज को महर्षि दयानन्द का आर्य समाज बनाने के लिए हमें सहयोग दीजिए।'
- 'जन-ज्ञान' प्रकाशन आर्य जनता के स्वप्नों को मूर्तरूप देगा····· विश्वास रखिए और पूरी शक्ति से सहयोग दीजिए। —संचालक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारतेन्द्रनाथ साहित्यालंकार
के संरक्षण-निर्देशन में
प्रकाशित

धरती के प्रत्येक मानव के हृदय मन्दिर पर वेद ज्ञान की पावन पताका फहराने के लिए कृत संकल्प

आर्य जनता का अपना
प्रतिनिधि प्रकाशन

जन-ज्ञान
मासिक

१५९७ हरध्यानसिंह रोड
करोलबाग नई दिल्ली-५

सम्पादक
भगवानदेव शर्मा
संचालक
महर्षि दयानन्द योगाश्रम
टंकारा (गुजरात)

वार्षिक मूल्य ६)
एक प्रति ५० पैसे

विज्ञापन दरें
प्रति पृष्ठ १००)
आवरण का द्वितीय व चतुर्थ पृष्ठ, २००)
आवरण का तृतीय पृ० १५०)

सम्पादकीय

फट से छूटने का मार्ग

आपस की फूट ने भारत-गारत किया। इसी फूट पिशाचिनी ने हमारी दुर्दशा की, यही सर्व-नाशिनी आज महर्षि के दिव्य स्वप्नों को समाप्त करना चाह रही है।

हमने बहुत सोचा-विचारा कि यह घर में कैसे घुसी ? कैसे निकालें इसे ? निष्कर्ष यही ज्ञात हुआ कि लक्ष्य विस्मृत करने का स्वाभाविक परिणाम विग्रह के रूप में प्रगट हो रहा है।

आग तो बुझानी ही होगी। सर्वनाश से पहले दयानन्द के सैनिक संभलें और सर्वत्र महर्षि का कार्य पूरा करने का व्रत लें तो समस्याएं स्वयं सुलझ जाएंगी।

आर्य समाजों के अधिकारी अपने मस्तिष्क में यह अंकित कर लें कि उनका कार्य केवल 'वेद' का संदेश फैलाना है और उसी के लिए वे दिन-रात संपूर्ण शक्ति से कार्य करेंगे · तो फिर सारा विवाद स्वतः नष्ट हो जाएगा।

हम संपूर्ण देश-विदेश में फैले दयानन्द के अनुयायियों से आग्रह करते हैं कि वे—

१. वर्तमान आर्यसमाज को महर्षि के मार्ग पर चलाएं।
२. सारी शक्ति 'वेद' का संदेश फैलाने में लगाएं।
३. विवाद-फूट को सख्ती से मिटाएं। प्यार एकता और संगठन के द्वारा विश्व को आर्य बनाने का संकल्प ही आर्य समाज को जीवित रख सकता है।

मृत्यु से लड़ो, जीवन मार्ग पर चलो, और ऋषि दयानन्द का कार्य पूर्ण करने का व्रत लो···यही हमारी, प्रार्थना है।

—भगवान देव शर्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत के शेर जाग

[स्वर्गीय श्री भगवत्प्रसाद जी शुक्ल "सनातन"]

भारत के शेर जाग !
मंडरा रहे हैं तेरे सिर पै, आज चील काग,
भारत के शेर जाग !!

दुनियां में देख हो रही कैसी उथल पुथल,
इतिहास को बदल रहा है एक एक पल,
है बरस रही आग ।
भारत के शेर जाग ।।

इस आग की लपटों में पड़ा झुलस रहा है,
स्यारों का झुण्ड देख तुझे हुलस रहा है,
कैसा कलंक दाग ?
भारत के शेर जाग ।।

उठ छोड़ दे आलस्य, तमाशा न और बन,
अपनी महान् शक्ति के अनुकूल आज तन,
कायर पने को त्याग,
भारत के शेर जाग ।।

तू भूल रहा आप को शेरों का शेर है,
कुल की परम्परा को जानने की देर है,
तेरी नहीं है लाग,
भारत के शेर जाग ।।

अपनी गुफा से निकल और गरज एक बार,
दुनियां लरज उठेगी, बज उठेगा, तार तार,
सोये जगेंगे भाग ।
भारत के शेर जाग ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सबलो अनपच्युतः (अ० २०-४७-३)

"बलवान् निजस्थान से गिराया नहीं जा सकता"

जिस देश की प्रजा शक्तिशाली और बलवान् है,
उसका ही इस पृथिवी पर वर्चस्व रहेगा।
दुनिया शक्तिशाली के सामने झुकती है।
बलवान् से सब मित्रता के इच्छुक रहते हैं।
कमजोर इस पृथिवी पर भाररूप है।
बलहीन-कमजोर होना महापाप है।

कमजोर के लिए जो पत्थर मार्ग का रोड़ा होता है, बलवान् उसको ऊपर चढ़ने की सीढ़ी बना लेता है।

बलवान् के लिए कोई बात असम्भव नहीं होती।

बलवान्-शक्तिशाली बनने के लिए आवश्यकता है—'ब्रह्मचर्य, की। ब्रह्मचर्य के लिए आवश्यकता है—खान-पान, विचारों तथा संग का अच्छा और पवित्र होना।

इसलिए संग पवित्र, विद्वान् एवं बलवान् व्यक्तियों का करना चाहिए और खान-पान शुद्ध और सात्त्विक रखना चाहिए। विचार पवित्र बनाने चाहिए। निश्चय ही तब हम आगे बढ़ेंगे। संसार की कोई शक्ति हमको अपने लक्ष्य से विमुख न कर सकेगी।

वीरयध्वं प्र तरता सखायः (अ० १२-२-२६)

अर्थ—"मित्रो उद्यम करो, पार हो जाओ।"

बिना पुरुषार्थ के कोई काम नहीं होता। उद्यम करने वाले अवश्य अपने कार्य में सफल होते हैं, जो चाहते हैं कि सफलता हमारे चरण चूमे, उन्हें निःस्वार्थ भाव से पुरुषार्थ करना होगा।

पुरुषार्थी व्यक्ति के लिए कोई कार्य असम्भव नहीं है। जिस देश के लोग पुरुषार्थी हैं; विश्व के इतिहास में उन्हींका ही नाम "स्वर्ण अक्षरों" में लिखा जाता है।

जिस देश के लोग पुरुषार्थ-हीन, आलसी हैं, वे अधिक दिन जीवित नहीं रह सकते।

पुरुषार्थी कभी भी दास नहीं रह सकता; और आलसी कभी भी स्वतन्त्र नहीं रह सकता।

यदि हम चाहते हैं कि, हम स्वतन्त्र और तेजस्वी बनें, तो हमें सब अच्छे कार्यों में पुरुषार्थ करना होगा।

आलस्य मौत की निशानी है; और पुरुषार्थ जीवन का लक्षण।

इसलिए—आलस्य छोड़ो; पुरुषार्थ करो।

—भगवानदेव

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"जन-ज्ञान" का प्रकाशन क्यों ?

आर्य समाज के रक्षक ही उसके भक्षक बन रहे हैं। रचनात्मक कार्यों में नेताओं की रुचि समाप्तप्रायः हो गई है। पदलिप्सा की भूख ने महर्षि के लक्ष्य को भुला दिया है। यह सभी लक्षण मृत्यु के हैं। किन्तु हम मृत्यु को चुनौती देना चाहते हैं। हमारा यह भी विश्वास है कि आर्य जनता के हृदय में रचनात्मक कार्यों के प्रति असीम रुचि है। वह महर्षि के कार्यों को पूरा करना चाहती है।

अतः आर्य जनता की महान् शक्ति का संग्रह कर सर्वत्र 'वेद ज्ञान' का संदेश फैलाने के दृढ़ संकल्प के साथ 'जन-ज्ञान' का प्रकाशन किया गया है। 'जन-ज्ञान' आर्य जनता का प्रतिनिधि है। आर्य जनता महर्षि की वास्तविक उत्तराधिकारिणी है। इसलिए हमें विश्वास है कि 'जन ज्ञान' द्वारा दयानन्द के दिव्य-स्वप्नों को मूर्तरूप देने का हमारा लक्ष्य सफल होगा। गत १८ वर्षों से हम इसी लक्ष्य के लिए कार्य करते रहे। हमें सर्वत्र सफलताएं भी मिलीं। किन्तु एक भी अनार्य व्यक्ति के कोप ने सभी कुछ भस्म कर दिया··· अनुभव ने जो सिखाया···उसके बाद हम एक ऐसे मार्ग पर चले हैं जिसे कोई नष्ट न कर सकेगा।

'जन ज्ञान' केवल एक पत्र नहीं एक आन्दोलन है जो आर्य समाज को महर्षि के मार्ग पर चलाने के लिए आरम्भ किया गया है। वे सभी हमारे अपने हैं जिनके मन में सर्वस्व समर्पण कर महर्षि का लक्ष्य पूरा करने की चाह है। हम उन्हें ही पुकारते हैं और साथ चलने का निमंत्रण देते हैं जो चाहते हैं कि संसार के प्रत्येक व्यक्ति तक वेद का पावन संदेश पहुंचना ही चाहिए।

एकाकी साधन विहीन होने पर भी प्रभु के विश्वास और आर्य जनता के प्यार के बल पर हमने यह कार्य आरम्भ किया है। हम क्या करेंगे···यह अभी घोषणा करना उचित नहीं · हमारे कार्यों को देखकर आप स्वयं विश्वास करेंगे कि यदि हमें आर्य जनता का स्नेह-आशीर्वाद मिलता रहा तो सभी अनुभव करेंगे कि ऋषि की पाखंड-खण्डिनी-पताका उठाकर हम चल रहे हैं—वेद का प्रकाश फैलेगा तो सर्वत्र आशा स्वयं बिखरेगी।

गत ४ वर्षों के हमारे प्रयत्नों ने आर्य जगत् में साहित्य के प्रति अपूर्व उत्साह उत्पन्न किया था। यह उत्साह समाप्त नहीं होना चाहिए। लेख-साहित्य के अस्त्र से अज्ञान की समाप्ति के प्रयत्न जारी रहने चाहिएं।

साधन जैसे-जैसे मिलते जाएंगे, कार्य बढ़ता जाएगा। हम साहित्य प्रकाशन का कार्य भी शीघ्र आरम्भ करेंगे। एक आदर्श संस्थान वैदिक संदेश प्रसारण का 'जन ज्ञान' बने यह हमारी इच्छा है।

जिन्हें हम पर, हमारी कार्य शैली और भावनाओं पर, विश्वास हो वे हमें दिल खोलकर सहयोग दें।

इन पंक्तियों द्वारा हम आपसे महर्षि के लक्ष्य को पूरा करने के लिए सहयोग मांग रहे हैं। आपका प्यार ही हमारी शक्ति है।

हम तो आपको इतना ही विश्वास दिला सकते हैं कि अपने प्राणों की अंतिम सांस तक, महर्षि के मार्ग पर उनकी इच्छा के अनुसार हम चलते जाएंगे और सभी को वेद की राह पर चलाने के लिए यत्न करते रहेंगे ·· ·· **भारतेन्द्रनाथ**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारी प्रचार यात्रा

'जन-ज्ञान' का सर्वत्र स्वागत हो रहा है। गत मास हम कुछ दिन दिल्ली में रहे। दिल्ली के प्रसिद्ध आर्य समाजी श्री लाला दीवानचन्दजी ने हमें 'जन-ज्ञान' प्रकाशन के लिए पचास रुपये दिए।

धन्यवाद !

करनाल के परम ऋषि भक्त राय साहब चौधरी प्रतापसिंहजी ने 'जन-ज्ञान' के सुन्दर प्रकाशन पर प्रसन्नता प्रकट की। और आगामी 'जन-ज्ञान' के महर्षि दयानन्द 'सम्बन्धी तैयार किए गए श्रद्धांजलि-अंक' के प्रकाशन के लिए अपने ट्रस्ट रायसाहब चौधरी प्रतापसिंह ट्रस्ट करनाल की ओर से ढाई सौ २५०=०० रुपये दिए। उनके भी हम हृदय से आभारी हैं।

दिल्ली में आर्य समाज हनुमान रोड के पुरोहित तथा प्रचारक वैद्य पंडित इन्द्रसेन 'विश्वप्रेमी', जो अच्छे कुशल वैद्य और भजनोपदेशक भी हैं : आपने 'जन-ज्ञान' के ग्राहक बनाने में हमें अच्छा सहयोग दिया। आप बड़े उत्साही प्रचारक हैं।

श्री लाला रामलाल ठेकेदार और उनकी धर्मपत्नि ने हमें हृदय से सहयोग दिया। आप दोनों दम्पति की सेवाएं दिल्ली में प्रसिद्ध हैं। आप लोगों के पुरुषार्थ से ही गत अनेक वर्षों से ऋषि की जन्मभूमि टंकारा में शिवरात्रि पर स्पेशल ट्रेनें आती रहीं। प्रभु ! आप दोनों को शक्ति दें।

दिल्ली से हम ता० १८ जून को बड़ौदा पहुंचे। गुजरात के कर्म योगी, आर्य समाजी नेता, अनेक शिक्षा संस्थाओं के संस्थापक, टंकारा ट्रस्ट के संस्थापक मंत्री पं० आनन्द प्रियजी का हमें हार्दिक सहयोग मिला। गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री पं० [illegible]-चन्द्रजी ने 'जन-ज्ञान' के लिए सह[illegible]ग दिया और दिलाने का वचन दिया।

वारसा कालोनी आर्य समाज; जिसका नया मन्दिर बनाया जा रहा है उसके उत्साही प्रधान श्री गोविन्दरामजी ने हमें पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। आप आर्य समाज के दीवाने सिपाही हैं बड़ौदा के अच्छे कुशल व्यापारी हैं।

बड़ौदा से ता० २० जून को श्री पं० आनन्दप्रियजी तथा श्री मोहनभाई देसाई के साथ हम जामनगर गए। वहां आर्य समाज का विशाल मन्दिर है। जिसको बनवाने में श्री करसनभाई गढ़वी, श्री गोकलदास ठक्कर, श्री भाणजी भाई आर्य का पुरुषार्थ समाया हुआ है। इस त्रिपुटी में श्री भाणजी भाई आर्य आज भी ८० वर्ष की आयु में नित्य समाज मन्दिर में जाकर यज्ञ करते हैं। आपने अफ्रिका में भी आर्य समाज का काफी काम किया है। आपके सुयोग्य पुत्र श्री रविन्द्र भाई आजकल बड़ी कुशलता से समाज के मन्त्रीपद को शोभायमान किए हुए हैं। समाज द्वारा 'श्रीमद् महर्षि दयानन्द कन्या

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विद्यालय' चलाया जा रहा है, जिसमें लगभग दो हजार कन्याएं विद्या अभ्यास करती हैं। सौराष्ट्र में यह संस्था अपने ढंग की एक है। यहां हमें श्री नानालाल उपाध्याय, श्री जयन्तीलाल ठक्कर, श्री रामचन्द्रजी तथा श्री पं० चन्द्रदेव झा का सहकार मिला। टंकारा आयुर्वेद कालेज के पुराने विद्यार्थी प्रिय अरविन्दकुमार जाटिया, प्रिय बलवन्तकुमार पण्डया आदि का अच्छा सहयोग मिला।

जामनगर से हम ता० २१ जून को टंकारा पहुंचे। यहां आने पर हमें बताया गया कि—'महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के वर्तमान नये मन्त्री श्री ओंकारनाथ ने ट्रस्ट बोर्ड से पूछे बिना, टंकारा में चल रहे सुन्दर व्यवस्थित आयुर्वेद कालेज को तोड़ दिया।' यह समाचार सुनकर हमें दुःख हुआ। इस संस्थां से टंकारा ट्रस्ट को काफी लाभ था; परन्तु टंकारा ट्रस्ट में जब से नये कुछ ट्रस्टी लिए गए हैं, तब से हम टंकारा की इस संस्था का पतन होता देखते आए हैं।

टंकारा को गुरुदेव दयानन्द की जन्म भूमि होने का सौभाग्य प्राप्त है। यही कारण है कि हम अनेक मित्रों के आग्रह होने पर भी टंकारा को छोड़ना पसन्द नहीं करते। दुःख में सुख में हमने यहां रहकर प्रेरणा पाई है। टंकारा की कुंज गलियां हमें प्यारी लगतीं हैं क्योंकि इन्हीं गलियों में मेरा मूलशंकर खेला होगा। टंकारा का संसार पर ऋण है क्योंकि टंकारा ने संसार को दयानन्द दिया है। दयानन्द ने हमें सही मार्ग बताया, उनका हमारे ऊपर ऋण है। उसे उतारने के लिए हमने उनकी जन्म भूमि में रहकर कार्य करना उपयुक्त समझा। गत अनेक वर्षों से हमने टंकारा विभाग की प्रजा की दिल खोलकर सेवा की। लोगों का हमें प्यार मिला। स्त्री-पुरुष, बूढ़े-बच्चे, हिन्दू-मुसलमान, गरीब-अमीर ने हमें प्रेम की दृष्टि से देखा। 'जन ज्ञान' के प्रकाशन में श्री गंगाराम राजसी, श्री दयालजी आर्य, श्री मनुभाई दोशी, श्री अमृतलाल राणपुरा, श्री रसीकलाल कटरिया आदि महानुभावों का हमें सदैव सहयोग मिलता रहता है। प्रभु! इन लोगों को शक्ति और यश दें।

टंकारा से हम ता० २४ जून को मोरवी गए। मोरवी सुन्दर शहर है। आर्य समाज का अपना भवन है। यहां की समाज के प्राण श्री लक्ष्मण भाई चौहाण हैं। आप 'सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा' के प्रधान भी हैं। आप इस क्षेत्र के लोकप्रिय नेता हैं। आपके सहयोगी श्री डाह्याभाई, श्री दुर्लभजी भाई आर्य बड़े का सुनकर टंकारा के पचासों व्यक्तियों ने उसे अपनाया लगभग सब दूकानदारों ने वार्षिकी चन्दा जमा कराया। हम उनके हृदय से आभारी हैं। श्री श्यामजी भाई आर्य, श्री अमृतलाल ठक्कर, श्री जवेरचन्द महता, श्री बाड़ीभाई गांधी, उत्साही काम करने वाले व्यक्ति हैं। श्री ध्यानपालसिंहजी जो रेलवे में सर्विस करते हैं। आप इस विभाग के रेलवे क्षेत्र में आर्य समाज का अच्छा प्रचार किया है। आप लोगों के सहयोग के लिए आभार।

मोरवी से हम ता० २७ को राजकोट पहुंचे। यहां दो समाजें हैं। दूसरी 'आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग' का अपना सुन्दर मन्दिर नया बनाया जा रहा है। इसके लिए अधिकारियों ने दान की अपील की है। इस समाज के कार्यकर्त्ता श्री माधु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत के राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति की

'जन-ज्ञान' को शुभकामनाएं

राष्ट्रपति के सचिवालय नई दिल्ली से
जून २२-१९६८ की पत्र सं० १८ एच १६२

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'जन-ज्ञान' मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया गया है।

—शुभ कामनाओं सहित

भारत के उप-राष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरी का २२ जून का पत्र

मैं 'जन-ज्ञान' मासिक पत्रिका की सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं भेजता हूं।

—वी० वी० गिरी

भाई आर्य, श्री सेठ गोरधनदास आर्य, श्री जमनादास आर्य, श्री मगनलाल आर्य आदि आर्य भाई मन्दिर बनाने में लगे हुए हैं। इस मन्दिर के निर्माण में आर्य श्रेष्ठी मदद करें ऐसी हमारी हार्दिक प्रार्थना है।

श्री भोगीलाल ठक्कर श्री शान्तिलाल आर्य श्री रमेश भाई आर्य, श्री शशिकान्त आर्य आदि अनेक आर्य युवक इस समाज के उज्जवल रत्न हैं। राजकोट में हमें दिल खोलकर सहयोग मिला। राजकोट हमारे राजनैतिक कार्य की भूमि रही है। इसलिए मित्र वर्ग यहां बहुत बड़ा है। यहां के आर्य युवकों ने 'जन-ज्ञान' को घर-घर में पहुंचाने का संकल्प किया है।

मुझे विश्वास है कि सर्वत्र जहां भी दयानन्द के सच्चे सैनिक होंगे, 'जन-ज्ञान' फैलेगा। 'ओ३म्' की पावन पताका जन-मन पर लहराने का प्रण पूरा करने के लिए हम ओ३म् पताका लेकर बाधाओं को पार करते आगे बढ़ते जाएंगे। प्रभु हमें शक्ति दें कि हम उसी के मार्ग पर अडिग होकर चलते रह सकें।

—भगवानदेव शर्मा

जन-ज्ञान का अगला अंक

महर्षि दयानन्द-श्रद्धांजलि अंक होगा

अंक का मूल्य १)। पृष्ठ १०८ होंगे। 'जन-ज्ञान' के सदस्यों को बिना मूल्य दिया जाएगा।

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रक्षा का मार्ग

जब रक्षक ही भक्षक बन जाएं, बाड़ ही खेत को खाने लगे, तो रक्षा कौन करे ? यह जलता प्रश्न है जो आज आर्य समाज के प्रत्येक हितचिन्तक के सामने खड़ा है ? आर्य समाज की स्थापना संसार को आर्य बनानेके लिए हुई थी। धरतीके समस्त मतवादों को मिटाना उसका लक्ष्य था। वेद का पावन संदेश प्रसारित करना उसका कार्यक्रम था।

किन्तु आज न वेद प्रचार है न किसी को आर्य बनाने की भावना। हम तो स्वयं भी आर्य न बन सके। संध्या, हवन, अध्यात्म भावना से कोसों दूर रहकर हम में भी युग की समस्त बुराइयों ने डेरा जमा लिया और परिणाम सामने है महर्षि दयानन्द का पावन लक्ष्य घू घूकर जल रहा है पर किसी भी हृदय में न दर्द है न आग बुझाने की भावना।

इन पंक्तियों द्वारा हम महर्षि के उन वीर सैनिकों को पुकारना चाहते हैं जो आज भी दयानन्द के काम और नाम के लिए मर मिटने को तैयार हैं।

हम उन विद्वानों, संन्यासियों और नेताओं को सम्बोधन करना चाहते हैं जिन्हें पदों और गद्दियों से मोह नहीं, जो ऋषि की अमर वेदपताका लेकर विश्व विजयकी चाह रखते हैं हमारी सभी व्यक्तियों से प्रार्थना है कि पद और गद्दीके भूखे भेड़ियों को आर्यमत समझो वे तो कलंक हैं आर्य समाज के। आर्य समाज तो ऋषिवर दयानन्द की पवित्र धरोहर है उसे संभालो और वेद प्रचार के पवित्र कार्य में जुट जाओ। आर्य-जन और आर्य समाज सारे भेद भुलाकर अपनी शक्ति वेद प्रचार में लगाएं। आपस में लड़नेवालों का कठोरता से बहिष्कार करें। अनुशासन और प्रेम के अस्त्र से अपना सभी कुछ वेद प्रचार में लगाएं। ईसाइयत का विषधर सर्वत्र फुंकार रहा है। उसके षड़यन्त्र और आसुरी बल हमारे अस्तित्वको मिटाने हेतु कटिबद्ध हैं।

भोगवादी समस्त विचार धाराएं हमें निरन्तर चुनौती दे रही हैं। उनके प्रभाव ने भारत के मस्तिष्कों को पथ भ्रष्टकर दिया है ग्रामोंमें आज भी जड़ता और अज्ञान अंधविश्वास छाया है। धर्म के नाम पर अनाचार फैल रहे हैं। नास्तिकता पिशाचिनी शिक्षा के साथ साथ फैलती जा रही है। ऐसे में भी यदि दयानन्द के अनुयायी सोते रहे या आपस में लड़ते रहे तो इतिहास कभी हमें क्षमा न करेगा। हमारी दृष्टि में आज निर्णायक वेला है। हम संभलें तो धरती पर वैदिक विचारधारा का साम्राज्य स्थापित हो सकता है। हम सोते रहे या आपस में उलझते रहे तो फिर रक्षक भगवान ही है।

हमारी हार्दिक इच्छा है कि प्रत्येक आर्य आज आत्म निरीक्षण करे। दूसरों के दोष देखने के स्थान पर अपने दोष देखे और विचार करे कि कहीं हम मार्ग तो नहीं भूल गए ? आत्म निरीक्षण और महर्षि का लक्ष्य पूरा करने का दृढ़ संकल्प ही हमारी प्रेरणा का निर्देशक बन सकता है। दयानन्द का लक्ष्य और कार्य हमें पूरा करना ही है हम ऋषि के स्वप्नों को मिटने नहीं देंगे। प्राण रहें या न रहें दयानन्द की ध्वजा नहीं झुकेगी, हम बढ़ते जाएंगे, दयानन्द के वीरों के साथ चलने के लिए बुलाते जाएंगे। विश्वास है कि विश्व-विजयी आर्य सेना रावण दल का संहार करने में अवश्य सफल होगी।

आर्यो ! जागो ! वेद-ज्योति को सम्भालो। संसार का अंधकार मिटाने का व्रत लो, रक्षा का अपनी और सभी की, एकमात्र यही उपाय है – **भारतेन्द्रनाथ**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज की मान्यताएं

श्री मदनमोहन विद्यासागर

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान पं० मदनमोहन विद्यासागर लिखित यह लेख आर्य समाज की मान्यताओं का वास्तविक रूप उपस्थित कर रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि आर्यजन हजारों की संख्या में इसे बांटें और प्रत्येक जनमानस तक आर्य समाज का संदेश पहुंचाएं।

—सम्पादक

अब तक के निरन्तर स्वाध्याय, विद्वानों के संग से मैं महर्षि के पूर्ण अभिप्राय' को जैसे समझ सका हूं, आर्य जनता के सामने रख रहा हूं। ऐसा करने का प्रयोजन यही है कि इससे आर्य समाज का विशाल सार्वभौमिक रूप विश्व के सामने आ जाए।

(१) आर्य समाज एक ऐसा आस्तिक सम्प्रदाय है, जो सृष्टि को रचने वाली आदि प्रेरक एक चेतन शक्ति व उसके दिये आदि ज्ञान को स्वीकार करता है। यह 'सनातन वैदिक धर्म' को मानता है।

(२) वह चेतन शक्ति नित्य, त्रिकालातीत, अपरिवर्तनशील, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, निराकार है। उसको भिन्न भिन्न नामों से विविध देशों में, भिन्न समयों में पुकारा गया है। विश्व के इतिहास में सर्वप्रथम उसे 'ओंकार' नाम से स्मरण किया गया। उसका कार्य 'सृष्टि का निर्माण' व उसका संचालन है। वह जीव के द्वारा कृत शुभाशुभ कर्मों के अनुसार उसको शुभाशुभ फल देती है।

(३) [क] यह सृष्टि जड़ (इच्छा व ज्ञान शक्ति रहित) तथा चेतन (इच्छा व ज्ञान शक्ति सहित)—दो प्रकार के तत्त्वों के मेल का परिणाम है। 'दृश्यमन-प्रपंच' का भौतिक कारण 'प्रकृति' है, जो इसका उपादान कारण है। वह 'सत्वरजस्तम' रूप से त्रिगुणात्मिका है और आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथिवी इन पांच स्थूल रूपों द्वारा विकसित होती है। ओंकार नामक चेतन शक्ति इसका नियामक है और इसी भौतिक तत्त्व से 'सर्ग स्थिति लय' का चक्र चलाती है।

[ख] इसके अतिरिक्त एक दूसरी चेतन शक्ति जीव है, जो सृष्टि का निर्माण नहीं करती परन्तु जिसके भोग के लिए इस सृष्टि का निर्माण होता है। वह अणुरूप है, नाना संख्याक है। 'इच्छा प्रयत्न ज्ञान' जिसके लिंग हैं, जो अपने किये को सुख-दुःख रूप में अनिवार्य रूप से भोगता है। कृमिकीटादि पशुपक्षादि व मानव रूप

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में वह इस सृष्टि में अपना व्यापार करता है। मानव-योनि में आकर वह अपने ज्ञानपूर्वक पुरुषार्थ से अपने लिए अनुकूल (अच्छी=शुभ) व प्रतिकूल (बुरी=अशुभ) परिस्थिति को बनाता है। वह 'स्वतन्त्र इच्छ शक्ति' वाला है जिसका अभिप्राय यह है कि वह कर्म करने में स्वतन्त्र है, पर फल भोगने में परतंत्र है।

[ग] इस प्रकार आर्य समाज की दृष्टि में सृष्टि के तीन मूल कारण हैं; जिनमें प्रकृति जड़ और जीव एवं ब्रह्म चेतन। तीनों अनादि अनन्त हैं; सर्वथा स्वतन्त्र पृथक् सत्तार्थ हैं। यह 'खेल' तमाशा' इन तीनों की वजह से है। 'यह दृश्यमान् जगत्' मिथ्या नहीं है, किसी लीलाविलास मात्र से अथवा 'दुन' से पैदा नहीं हुआ। अभाव से भाव का होना भी अवैदिक व युक्ति विरुद्ध होने से 'आर्य समाज' को सामान्य नहीं।

(४) यह जीव अज, नित्य, शाश्वत है; अल्प शक्ति वाला, अल्प ज्ञान वाला है। नाना योनियों में आने-जाने का नाम ही 'पूर्वजन्म व पुनर्जन्म' है। किये जाते हुए कर्मों का नाम 'क्रियमाण'; जिनका फल भोग रहा है वे 'प्रारब्ध'; जिनका भोगना शेष रहा है वे 'संचित' कर्म कहाते है। हरएक योनि में वह स्त्री पुरुष दो रूपों में जाता है।

(५) आर्य समाज चार वेदों को स्वतः प्रमाण मानता है। क्योंकि—

[क] (१) उनमें लिखे हुए सिद्धान्त सार्वभौम, सार्वजनिक, सार्वकालिक हैं। वे किसी देशकाल विशेष के लिए लिखे गए प्रतीत नहीं होते।

(२) दूसरे उनमें कोई भी सिद्धान्त बुद्धि विज्ञान व अनुभव के विरुद्ध नहीं पाया जाता।

[ख] भारत भूमि में रचित तद्भिन्न साहित्य को आर्ष व अनार्ष दो भागों में बांट, आप्तोपदिष्ट आर्य ग्रन्थों का प्रामाण्य आर्य परम्परानुसार वेदानुकूलतया ही मानता है। इसलिए ये सब ग्रन्थ परतः प्रामाण्य हैं।

[ग] एतद्भिन्न 'विश्व साहित्य' को आदर की दृष्टि से देखता हुआ उनमें निर्दिष्ट विज्ञानाविरुद्ध व वेदानुकूल अंश को ही प्रामाणिक अंगीकार करता है। विज्ञान व तर्कावलम्बी प्रत्येक विषय को सत्य स्वीकार करता है, चाहे वह किसी ने, किसी भी समय में किसी भी देश या परिस्थिति में क्यों न कहा हो ?

(६) [क] सर्व भूतदया=सर्व जन-हित भाव के सिद्धान्तानुसार प्राणी मात्र में सबके साथ यथायोग्य बर्ताव चाहता है।

[ख] 'मानव समाज' में समान भ्रातृ-भाव, समान-स्वातन्त्र व समानाधिकार के सिद्धान्त को स्वीकार करता है।

[ग] स्त्री-पुरुष के नैसर्गिक भेदों को छोड़ अन्य सब आहार विहारादि में उनको समानाधिकार देता है।

(७) मनुष्य के पूर्ण विकास के लिए उसका सर्वांगीण वैयक्तिक विकास व जिस समाज में वह रहता है उसकी चतुर्मुखी उन्नति का मार्ग बताता है।

[क] 'सर्वांगीण वैयक्तिक विकास' अर्थात् उसकी शारीरिक व मानसिक उन्नति के लिए 'योग प्राणायामादि' का प्रचार करता है। मांस, शराब, मादक द्रव्य, सिगरेटादि का तीव्र निषेध करता है। ब्रह्मचर्य पालन में अधिक जोर देता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। व्यक्ति के लिए 'पंच महायज्ञ' दैनिक प्रोग्राम व षोडश संस्कार जीवन प्रोग्राम का प्रचार करता है।

[ख] 'चतुर्मुखी सामाजिक अभ्युदय' के लिए वेदानुकूल वर्णाश्रम व्यवस्था का पोषक है। यह जन्म से नहीं अपितु गुण कर्मानुसार होनी चाहिए। इसकी दृष्टि से समाज में सब 'व्यक्तियों को परहित' का ध्यान रखते हुए स्वहित=उन्नति का पूर्णधिकार है; देश जाति सम्प्रदाय किसी का भी कोई भेद नहीं। जन्म से व्यवहार में प्रचलित वैयक्तिक या जातीय हर प्रकार के ऊंचे-नीचे के भेद को यह वैध उपाय से समूलोन्मूलन करने को सदा यत्न करता है।

(८) [क] समाज में विद्या व शिक्षा का कार्य करने वाले वर्ग को ब्राह्मण, पीड़ित व शोषित वर्ग अत्याचारियों से रक्षा करने वालों को क्षत्रिय, देश के व्यवसायी वर्ग को वैश्य और परिश्रम करने वालों को शूद्र कहता है। इनमें सामाजिक अधिकारों की दृष्टि से कोई छोटा नहीं। आहार-विहार विद्या का अधिकार सबको समान है।

[ख] भूतल पर बसने वाले किसी भी मानव समुदाय में वहां की देशकाल परिस्थिति के अनुसार बने धर्म न्याययुक्त नियमों में चलने वाले उत्तम नागरिकों को आर्य और सामाजिक व्यवस्था का उपक्षय कर प्रजावर्ग का किसी प्रकार से शोषण करने वाले दल को दस्यु मानता है। इनका दमन 'अधिक जनहित' के विचार से न्यायानुमोदित मानता है।

(९) [क] 'अविद्या का नाश और विद्या की अभिवृद्धि' करने में बिना स्त्री-पुरुष व रंग-भेद के सर्वदा तत्पर रहता है। सह-शिक्षा को मानव समाज के लिए अहितकर समझता है, शिक्षा विधान में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली है—अर्थात् पारिवारिक व नागरिक वातावरण से दूर रह आश्रमों में विद्याभ्यास को प्रमुखता देता है।

[ख] मनुष्य जीवन का उद्देश्य यथार्थ ज्ञान प्राप्त करते हुए व्यक्ति का पूर्ण विकास है। वह प्रत्येक मनुष्य को शारीरिक व मानसिक दृष्टि से पूर्ण उन्नत देखना चाहता है। शाश्वत सुख प्राप्ति के लिए दोनों प्रकार का अभ्युदय परमावश्यक समझता है। जीवन को 'सत्यं शिवं सुन्दरं' बनाना चाहता है। कला का उपासक है। जीवन में सदाचार, सरलता, सादगी व सौन्दर्य (=माधुर्य) देखना चाहता है। इस प्रकार के कार्यों को सदा प्रोत्साहित करता है।

(१०) प्रत्येक देश के लिए उसकी मातृभाषा को राजभाषा किए जाने के, सार्वभौम सर्वतन्त्र सिद्धान्तानुसार, भारत देश के लिए हिन्दी (आर्य भाषा) को राष्ट्रभाषा स्वीकार करता है और प्रत्येक आर्य सभासद् को इसके पढ़ने की प्रेरणा करता है।

प्रत्येक देश की विद्या सभाओं में शिक्षा का माध्यम उस देश की राजभाषा ही होनी चाहिए। इसी में मानव जाति का कल्याण देखता है।

(११) [क] मानव जाति निर्माण के लिए परिपक्व आयु में समान गुणशील सम्पन्न स्त्री-पुरुषों में 'एक विवाह' को प्रोत्साहित करता है। जन्म से मानी जाने वाली जाति-पांति में विवाह का कट्टर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विरोध करता है।

[ख] दोनों में से किसी एक के मर जाने पर (या किसी अन्य घटना के कारण सम्बन्ध योग्य न रहने की दशा में) नियत समय तक दोनों की इच्छा हो तो दोनों के लिए समान रूप से पुनर्विवाह को स्वीकार करता है।

(१२) [क] प्रत्येक देश की पूर्ण स्वतन्त्रता अर्थात् सब प्रकार के राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व्यापारिक व आर्थिक मामलों में उस देश की प्रजा का शासनाधिकार स्वीकार करता है।

[ख] एक देश का दूसरे देश पर, एक जाति का दूसरी जाति पर, एक समूह का दूसरे समूह पर उसकी इच्छा के विरुद्ध प्रभुत्व का प्रबल विरोधी है। पूंजीवाद, साम्राज्यवाद का कट्टर शत्रु है।

[ग] संसार का उपकार करना, अर्थात् मानवमात्र की मानसिक, आत्मिक, सामाजिक व राष्ट्रीय उन्नति इसका परम ध्येय है।

(१३) प्रजार्थ प्रजा में से (बिना किसी देश, जाति, कुल मतभेद के) प्रजा द्वारा चुने प्रतिनिधियों के शासन की प्रजातन्त्रात्मक व्यवस्था को सर्वोत्तम मानता है।

(१४) प्रत्येक देश के वासियों को अपनी स्वदेश वस्तुओं का उपयोग करना चाहिए इस सर्वतन्त्र नियमानुसार स्वदेशी वस्त्र, स्वदेशी सभ्यता व संस्कृति और स्वदेशी व्यापार की अभिवृद्धि करने में सर्वदा यत्नशील रहता है। विदेशी सभ्यता की बुराइयों से भारतीयों को सचेत करता है।

(१५) सबके इकट्ठे होने के स्थलों अर्थात् भोजनशाला, पार्क, पुस्तकालय व पूजा स्थलों पर सबके समान प्रवेश को स्वीकार करता है।

(१६) विश्व शान्ति के लिए—

[क] हरएक राष्ट्र को जिसमें एक भाषा; एक प्रकार के आचार-विचार वाला जन-समुदाय रहता हो; (चाहे उसमें कितने भी मतमतान्तर क्यों न हों) और जिसमें ऐसे समुदाय को रहते इतने वर्ष बीत गए हों कि उसके साथ मातृत्व जागृत हो गई हो; उसको राजनैतिक (=भूः) व सांस्कृतिक (=भुवः) आत्मनिर्णय (=स्वः) का पूरा अधिकार देना चाहता है।

[ख] अन्तर्जातीयवाद का समर्थन करता है।

(१७) [क] मनुष्य के लिए सौ वर्ष तक कर्म करते हुए 'अदीन=स्वतन्त्र' जीवन बिताने का उपदेश करता हुआ सर्वतोमुखी कल्याण के निमित्त, सबके परिश्रम को अनिवार्य समझता है। बिना परिश्रम के उपभोग करने व अकेले खाने को पाप समझता है।

[ख] योग्यतानुसार समाज में सबका स्थान नियत करता है। आवश्यकतानुसार सबके भोजनाच्छादन का बिना किसी पक्षपात के निर्णय करता है। अर्थात् 'मानव संघ' के अभ्युदय के लिए हर व्यक्ति की योग्यता से लाभ उठाना और सबके लिए भोजन वस्त्र व विद्या का प्रबन्ध करना इसका उद्देश्य है।

[ग] आर्य समाज उत्तम आर्य नागरिकों के निर्माण द्वारा एक ऐसे 'मानव-समाज' की सृष्टि कर रहा है जिसमें उच्च-नीच, गरीब-अमीर, शोषक शोषित भेद-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाव मिट जाएंगे। एक ऐसे प्रेम की सृष्टि करना चाहता है जो प्राणीमात्र में एकता लाकर 'अत्याचारी पशु मनुष्य को सच्चा मानव' बना दे।

(१८) संसार के समस्त महापुरुषों का गौरव करता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती को प्राचीन वैदिक धर्म का पुनरुद्धारक, भारतवर्ष की चतुर्मुखी उन्नति का पिता, भारतीयों का संगठक और इस संस्था का संस्थापक मानता है।

(१८) सब प्रकार के दुःखों से, पूर्ण रूप में छूटने का नाम मुक्ति मोक्ष या शाश्वत सुख प्राप्ति है। इसके लिए किसी व्यक्ति विशेष या पुस्तक विशेष में विश्वास को अनावश्यक समझ 'सदाचार=अष्टांग-योग' को प्रोत्साहित करता है। परन्तु—

[क] आर्य समाज का नियमित सदस्य बनने के लिए वेदों में व महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित तद्नुकूल सिद्धान्तों में विश्वास को आवश्यक समझता है।

[ख] चाहे कोई इस संघ का सदस्य हो या न हो, जो भी इसके सिद्धान्तों को अपने 'जीवन का दर्शन' मानता हो उसे वैदिकधर्मी व आर्य स्वीकार करता है।

याचना

दीप जलाकर ढूंढ रहा हूं
फिर भी तुम्हें न पाऊं,
पथराई आंखों में निर्मल
ज्योति कहां से लाऊं?
इसी सोच में पड़ा निरन्तर
मैं निराश हो जाता।
मिटता जो तुमको पाने में
वह ही तुमको पाता।
ज्योति-रूप हे, ज्योति दिखाओ
नव जीवन पा जाऊं।
गूंगा हूं वाणी दो, तुमको
मन के गीत सुनाऊं।
घोर विपद है तुम्हें न पाता
कैसे व्यथा सुनाऊं?

टूटे मन की टूटी वीणा
कैसे बीन बजाऊं?
रूप तुम्हारा समझ जगत् को
जब - जब आगे बढ़ता।
फूल भी कांटा हो जाता है
पत्थर आगे पड़ता।
क्यों ऐसा होता जीवन में
समझ न कुछ मैं पाता
आंखों का पानी बह करके
सागर बन लहराता।
मन के वासी, हे जीवन-धन!
अपना भेद बताओ।
दूर निराशा कर दो, मन में
आशा - ज्योति जगाओ!

—'कमल' साहित्यालंकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दुःख क्या है?

सुख कैसे मिले ?

सब सुख चाहते हैं पर दुःख मिलता है···उलझन बढ़ती जा रही है···लेख पढ़िए और मार्ग जानिए···सुख प्राप्ति का—

सम्पादक

सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता परो ददातीति कुबुद्धिरेषा ।
अहं करोमीति वृथाभिमानः स्वकर्मसूत्रैर्ग्रथितो हि लोकः ॥

सदा बुराई की उपमा अंधेरे से और भलाई की या सुख की उजाले से दी जाती है। जिस प्रकार प्रकाश तमाम संसार को सदा प्रकाशित करता है और अंधेरा सिर्फ थोड़े स्थान पर ही होता है, एक चिह्न विश्व पर पड़ी छाया है जो किसी वस्तु के बीच में आ जाने, या प्रकाशमय वस्तु की कुछ किरणों को रोक देने से उत्पन्न होती है। ठीक इसी प्रकार अत्यन्त कल्याणकारी प्रभु का प्रकाश ही वास्तविक और जीवनप्रदायनी शक्ति है जो त्रिभुवन में व्याप रही है और बुराई एक छाया है जो आत्मा के बीच में आ जाने से कल्याणकारी ईश्वर के प्रवेशार्थ प्रयत्नशील प्रकाशमय किरणों के आविद्ध हो जाने पर पड़ा करती है। जब रात्रि अपने अभेद्य-आवरण से भूमण्डल को ढक लेती है तब चाहे जितना अन्धकार हो वह हमारे छोटे से ग्रह (भूमण्डल) के अर्ध भाग अर्थात् केवल थोड़े से स्थान को ही ढक पाता है और समस्त विश्व सजीव प्रकाश से प्रकाशित रहता है।

बुराई क्या है ?

संसार एक दर्पण है जिसमें प्रत्येक मनुष्य अपने ही स्वरूप के प्रतिबिम्ब को देखता है इसलिए आत्मा के अपने स्वरूप पर जो कुछ प्रतिकूल कर्मों या संस्कारों की छाया पड़ जाती है उसी को मनुष्य संसाररूपी दर्पण में देखता है और वही बुराई है।

आग में हाथ डालने से सब का हाथ जल जाता है, किसी का पक्षपात नहीं होता। जैसा बीज कोई डालता है वैसा ही फल ले लेता है। इसका विरोध नहीं हो सकता, यह अटल नियम है। ठीक इसी प्रकार यही नियम हमारे मस्तिष्क पर या मनरूपी खेती में काम करता है। घृणा, क्रोध, द्वेष, ईर्ष्या, इन्द्रियलोलुपता और लालच ये सब अग्नियां हैं जो कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जलाती हैं। जो कोई इनको छू भी जाता है उसे जलने का कष्ट उठाना ही पड़ता है। या ये खट्टे और कड़ुवे बीज हैं जिनका फल शीघ्र या देर से निकल ही आता है इसको कोई रोक नहीं सकता। जिस मस्तिष्क में या हृदय में यह अग्नि जल रही है वहां शान्ति की ठण्डी हवा कैसे चल सकती है (और ये ही किसी व्यक्ति या जाति की कमजोरियां हैं) इस विश्व-व्यापी अटल-नियम को ठीक समझ लेने से ही मनुष्य की प्रकृति बदलती है। और वह अपने मस्तिष्क में प्रेम, मन्यु, करुणा, इन्द्रियसंयम, प्रसन्नता, उदारता, एकता, और न्यायादि के बीज लगाने का यत्न करता है और शक्तिशाली बनता है क्योंकि ये ही किसी व्यक्ति या जाति की शक्ति या बल के बीज हैं।

जैसे ईंट पर ईंट नियमपूर्वक और निरन्तर लगे रहने से एक दीवार खड़ी हो जाती है ऐसे ही शुभ विचारों पर शुभ विचार वा संस्कारों को निरन्तर इकट्ठा करते जाने से एक दिन शान्त ठण्डी वायु का स्रोत मनुष्य के अन्दर बहने लगता है। और जहां वह स्वयं शान्ति व आनन्द को प्राप्त करता है वहां दूसरों को भी इस गुण की प्राप्ति करा सकता है क्योंकि जिसके पास गरम या ठण्डा जैसा पानी होगा वैसा ही स्वयं भी पीयेगा और दूसरों को भी पिलाएगा और वैसा ही फल प्राप्त होगा।

इस वास्ते जो दूसरों का सुधार करना चाहता है उसको पहिले स्वयं सुधरना चाहिए अर्थात् उन गुणों को स्वयं धारण करना चाहिए और विपरीत अवगुणों को छोड़ना चाहिए, जो संसार को जगाना चाहता है और सुख शान्ति का जल पिलाना चाहता है उसको स्वयं जागना चाहिए। जो स्वयं सोया है वह दूसरों को कैसे जगाएगा और चोर-डाकुओं से बचाएगा? बुझा हुआ दिया रोशनी कैसे दे सकता है? जो दूसरों को जीवन, उष्णता और गति देना चाहता है प्रकाश-मान करना चाहता है उसमें स्वयं अग्नि के गुण प्रज्वलित होने चाहिएं और यही प्रभुभक्ति है।

इससे यह सिद्ध हुआ कि हमारी सारी शक्तियों और निर्बलताओं का कारण हमारे अन्दर ही विद्यमान रहता है। अर्थात् हमारे सुख, आनन्द का रहस्य वा कल्याण का कारण और इसी प्रकार तमाम दुःखों का कारण भी हमारे अपने ही अन्दर है या हम स्वयं ही हैं।

वास्तव में अन्तरविकास के बिना कोई उन्नति नहीं हो सकती और जब तक नियमपूर्वक ज्ञानवृद्धि नहीं होती, सृष्टि के अटल नियमों को धारण नहीं किया जाता तब तक संसार में शान्ति वा प्रसन्नता का आगमन नहीं हो सकता। यदि कोई यह कहे कि मेरी अवस्था ऐसी है, साधन पर्याप्त नहीं हैं, भाग्य ही ऐसे हैं, माता पिता वा संगत ऐसी है, दूसरा सताता है कुछ करने नहीं देता, गरीब हूं जमाना अनुकूल नहीं। ये सब हमारी निर्बलतायें हैं। जैसे किसान का काम नियमपूर्वक जमीन तैयार करके बीज लगाना है, बीज के अनुकूल परमाणु और साधन वा फल देना प्रकृति का काम है, ऐसे ही दृढ़निश्चय होकर अपने को उत्तम बनाने के बीज नियमपूर्वक अनुकूल जमीन में लगाना है, उसको वैसी संगति वैसी पुस्तकें वैसे साधन उपस्थित करना ईश्वर का काम है। वहां चूक नहीं होती। संकल्प दृढ़ होना चाहिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और कष्ट सहन कर किसान की भांति धीरज करके अपने कर्तव्य का पालन करे फल समय पर अवश्य आवेगा।

इसी प्रकार एक को देखकर दूसरे भी अपने आंगन या जमीन में वैसे ही बीज लगावेंगे और संसार बदलेगा। इसके बिना कोई साधन संसार को उत्तम-शान्त बनाने का नहीं है। जो कुछ हमको मिला है उसका सदुपयोग करने से और योग सिद्ध करने से उससे उत्तम बड़ा मकान या शासन या गुरु से शिक्षा आगे को मिलती है। इसमें शंका का स्थान नहीं। इसलिए मनुष्य को ईश्वरीय दान शरीर वा इन्द्रियों का सदुपयोग करना चाहिए क्योंकि अन्दर को बदलने से बाहर का संसार अपने आप बदल जाता है—वैसा ही बन जाता है। इसलिए हमारा दुःख का कारण और कोई नहीं है। अपने-आपसे दगा करने के अभ्यास से बढ़कर और अधिक अभ्यास अपने को गिराने, नीच बनाने और आत्मा के नाश करने वाला नहीं है अर्थात् अपनी निर्बलताओं को न देखना या उनको नजरअन्दाज करना और यही भावना रखना या शिकायत करना कि मेरा मालिक कठोर है अमुक मुझे सताता है। वास्तव में ये सब विचार अपने अन्दर के हैं। अपनी निर्बलता के हैं। मेरा शिकायत करना ही बतलाता है कि मुझमें सहनशीलता का गुण नहीं है और क्रोध की अधिकता है। मैं परिश्रम करने से, कर्त्तव्यपालन से और विश्वासपूर्वक काम करने से कतराता हूँ, जी चुराता हूं और आराम चाहता हूं जो कि स्वयं निर्बलता है और उन्नति में बाधा है। यह अटल नियम सबको स्मरण रखना चाहिए।

जो किसी का सताता है वह अवश्य सताया जाएगा, और सम्भव है मैंने भी किसी को सताया हो जो आज सताया जाता हूं, इस भाव को सामने रखकर (एक बीज की तरह जो अपने ऊपर की मिट्टी को हटाकर एक दिन सुगन्धित फूल की शक्ल में प्रकट होता है और सबके प्रेम का पात्र बन जाता है) मनुष्य को तप और सहन-शीलता का गुण धारण करके ऊपर उठने का प्रयत्न करना चाहिए; क्योंकि बिना तप के किसी को कुछ प्राप्त नहीं होता।

अतः सुख के चाहने वाले को अपने आन्तरिक जीवन और उसके शासन करने वाले अटल-नियमों का ज्ञान प्राप्त करके अनुभव करना चाहिए कि वास्तव में हम अपने भीतर के कार्यों से ही दुःखी होते हैं। जो कठिनाईयां हम पर आती हैं वह भी हमारी शिक्षा के लिए हैं और हमारी दुर्बलताओं को देखने और हटाने के औषध-रूप में आती हैं, यही ज्ञान दुःख को भी सुख का रूप दे देता है।

यदि वास्तव में हमारा स्वामी अथवा कोई दूसरा साथी कठोर है और उसका स्वभाव वैसा ही बन गया है तो भी हमारा कर्त्तव्य है कि उसको अपनी कृपाओं, एवं दयालुताओं और अपनी सहनशीलता की शक्ति के बोझ से इतना लाद देवें कि वह स्वयं ही हमसे क्षमा मांगने पर बाधित हो जावे और हमसे आन्तरिक प्रेम करने के लिए मजबूर हो जावे। हमें अपना परम-मित्र समझने लगे। उसको हमारे सदाचार का विश्वास हो जावे अर्थात् हम अपने तप से दूसरे के अवगुणों का सुधार कर देवें।

शेष पृष्ठ ३८ पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दस्यु, दास और पणि

शास्त्रार्थ महारथी पं० बिहारीलाल शास्त्री

सत्य की ओर ले चलने वाला मार्गदर्शक लेख अनुभवी विद्वान की लेखनी से प्रस्तुत है, आपके नेत्र खोलने के लिए

सच्ची घटना है कि बरेली जिले के 'इट-उआ' ग्राम की उदासीन गद्दी के महन्त श्री बाबा प्रेमदासजी रात में कुछ मुसलमान रईसों के साथ बैल-तांगे में बैठे किसी मामले मुकदमे में जा रहे थे। जब तांगा ऐसी जगह पहुँचा जहाँ कुछ दूरी पर क़ब्रिस्तान था तो देख पड़ा कि कुछ सफेद वस्तुएँ बार-बार उठती और झुकती हैं। रात चाँदनी थी। यह दृश्य देखकर तांगे में बैठे मुसलमान रईसों ने बड़ी श्रद्धा से उधर को सलामी दी।

बाबाजी ने पूछा कि कौन है जिसे आपने बड़े अदब से सलामी झुकाई? तो मुसलमान बोले—"देखते नहीं हो क़ब्रों में से निकलकर पीर लोग नमाज़ पढ़ रहे हैं?"

बाबाजी पक्के आर्य समाजी थे हँसकर बोले—"मूर्खता की बात करते हो। मुर्दे से तो करवट भी नहीं ली जाती, ये निकलकर नमाज़ कैसे पढ़ सकते हैं?" बातचीत बढ़ गई तो बाबाजी गाड़ी से नीचे कूद पड़े और तबर हाथ में लेकर चले कि अभी देखकर आता हूँ। मुसलमान चिल्लाए—"बाबाजी क्यों खतरा मोल लेते हो? पीर लोग मार डालेंगे।" परन्तु बाबाजी न रुके और वहाँ जाकर देखा तो 'भरा' (एक प्रकार की लम्बी घास) जिसके फूंस से छप्पर बनाए जाते हैं। इसके लम्बे फूल सफेद होते हैं। वह हवा से हिलकर नीचे ऊपर हो रही थी। बाबाजी ने तबर से कुछ पौधे काटे और लाकर मुसलमानों को दिए कि "ये लो अपने पीरों को" बात क्या थी? एक वहम था कि वह घास पीर बन गई। उन मुसलमानों में यह वहम क़ुरान के आधार पर था। क़ुरान में लिखा है—और जो लोग अल्लाह के रास्ते में मारे गए हैं उनको मरा हुआ खयाल न करना। ये मरे नहीं हैं बल्कि अपने परवरदिगार के पास जीते जागते मौजूद हैं। (सूरते-अलि इमान) ठीक इसी प्रकार भ्रम का छोटा-सा बीज एक बड़ी कल्पना के वृक्ष को यूँही जन्म दे देता है।

योरुप के ईसाई वेद-पाठियों ने एक भ्रमात्मक धारणा बना ली कि जैसे यहूदी समूह रूप में पैलस्टाइन में आकर वहाँ की जातियों को परास्त करके वहाँ बस गए। इसी प्रकार कोई आर्य जाति थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वह जाति कहीं से आकर भारतवर्ष में घुस पड़ी और यहाँ की जातियों को मार-तोड़कर हरा दिया और इस देश की मालिक बन गई।

बस इस एक निराधार धारणा को आधार बनाकर उन्होंने वेदों का अध्ययन किया और उसमें आर्य लोगों का एक इतिहास कल्पित कर डाला। आर्य लोग बाहर से आए तो उनका मुकाबिला जिनसे हुआ उनका नाम उन्होंने दस्यु, दास और पणि रखा। आर्यों का नेता इन्द्र था और आदिम भारतीयों का नेता 'शम्बर' या 'वृत्र' था और इनके सेनापति थे चुमुरि, नमुचि, पिप्रु, धुनि आदि।

ये द्रविड़ थे। इनके पास लोहे के सैकड़ों किले थे। नगर थे। ये लोग बड़े सभ्य थे। धनवान् थे। इनकी नाकें चपटी थीं। इनकी बोली बड़ी मीठी थी इनका रंग काला था। इनसे बहुत दिन तक संघर्ष हुआ। ये हार गए और इन्हीं के वंशधर कोल, भील संथाल आदि हैं।

यूरोपीय लोगों की इन कल्पनाओं पर अन्धविश्वास करके भारतीय विद्वानों ने, नेताओं ने भी यही धारणा बना ली और इसको लेकर अनेक उपन्यास, इतिहास आदि रच डाले। वस्तुतः न कोई आर्य जाति थी न वह बाहर से आई। इनकी इस निराधार कल्पना पर निरुक्त रो रहा है पुराण सिर पीट रहे हैं। वेद पढ़ने की शैली और परम्पराएँ आश्चर्य कर रही हैं। परन्तु ये "अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः" होकर चले जा रहे हैं। इनमें से अनेक तो ऐसे हैं जो संस्कृत का फूटा अक्षर भी नहीं जानते परन्तु वेदों में आर्यों का इतिहास और द्रविड़ संघर्ष की गर्जना कर रहे हैं। आत्महीनता और अविवेक की पराकाष्ठा है।

अब इनके चुने हुए मंत्रों को देखिए जिनके आधार पर इनकी कल्पनाएँ दौड़ रही हैं—

१—"सयो न मुहे न मिथू जनोभूत् सुमन्तु नामा चुमुरि धुनिञ्च।
वृणकू पिप्रुं शम्बरं शुष्णमिन्द्रः पुरां—चोत्नाय शयथाय नूचित्।"
(ऋ० ६।१८।८)

२—"तस्मै तवस्यमनुदायि सत्रेन्द्राय देवेभिरर्णं सातौ प्रति यदस्य वज्रवाह्वोर्धुर्हत्वी दस्यून पुरआयसीर्नितारीत्।"
(ऋ० २।२०।८)

३—"सवृत्रहेन्द्रः कृष्णयोनीः पुरन्दरो दासी रैयद्वि।" (ऋ० २।२०।७)

४—"अध्वर्यवो यः शतं शम्बरस्य पुरो विभेदाश्मनेव पूर्वीः।
यो वर्चिनः शतमिन्द्रः सहस्रमपावपद् भरतसोमसस्मै।" (ऋ० २।१४।६)

५—'प्रान्यञ्चक्रमवृहः सूर्यस्य कुत्सायान्यद् वरिवोयातवेऽकः।
अनासादस्यूंरमृणेवधेन निदुर्योण आवृणङ् मृध्रवाचः।"
(ऋ० ५।२९।१०)

६—"पदा पणीरराधसो निवाधस्व महाँ असि नहित्वा कश्चन प्रति।"
(ऋ० ८।६४।२)

७—आरिख किकिरा कृणु पणीनांहृदयाकवे। अथेमस्मभ्यंरन्धय।
(ऋ० ६।५३।७)

इन मन्त्रों और इन जैसे अन्य मन्त्रों में आए हुए दस्यु, आयसीपुर (लोहे के नगर) चुमुरि धुनि, पिप्रु, शम्बर वृत्र कृष्णयोनी (काले), अनास (नाकहीन), मृध्रवाचः (मिठबोले), पणि शब्दों को लेकर इन्होंने विचारों के घोड़े दौड़ाए हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सरल हिन्दी

यह कहना कि हिन्दी को सरल बनाओ,
कहना है कि पानी को तरल बनाओ !
क्या अजब है तमाशा
प्रचलित हिन्दी भाषा
जो मधुर है सरल है
सशक्त और सबल है
जो बदलना चाहते
स्वयम् छलना चाहते
किस हद तक बढ़ गई है नादानी;
कहते हैं अमृत को गरल बनाओ !
भाषा का पराग यह
साहित्य का सुहाग यह
युगों से निखारी हुई
जतन से संवारी हुई
इसे यों ही रहने दो
अपनी राह बहने दो !
सोचो-समझो न अक्लमन्दी दिखाओ,
सरस्वती-मन्दिर मत अस्तबल बनाओ !

०

—चन्द्रकान्त 'चन्द्र'

संसार-भर की जातियों के जनक आर्य लोग ही हैं। आर्य बाहर से नहीं आए किन्तु आर्य लोग यहाँ से बाहर को गए और उन्होंने नये-नये देश बसाए। इसका प्रमाण इतिहास है। परन्तु आर्य बाहर से आए यह किसी आर्य ग्रन्थ वा पुराण में नहीं लिखा मिलता। एक बुद्धि पुंगव ने लिखा है कि आर्य लोग जब भारत में नहीं आए थे तब उन्हें हाथी और व्याघ्र का पता नहीं था ऋग्वेद में कहीं हाथी का पता नहीं।

परन्तु ऋग्वेद मंडल ४ सूक्त १६ मंत्र १४ में हस्ती, मृग, सिंह शब्द विद्यमान हैं।

"मृगो न हस्ती तविषी मुषाणः सिंहो न भीम आयुधानिबिभ्रत्।"

अब दस्यु कौन हैं यह वेद में ही देखिए—

"अकर्मा दस्युरभिनो अमन्तुरन्यव्रतो अमानुषः। त्वं तस्यामित्रहन् वधर्दासस्य दम्भय।" (ऋ० १०।२२।८)

अकर्मा—निकम्मा, कामचोर

अमन्तुः—विचारहीन

अन्यव्रतः—उलटे आचरण वाला

अमानुषः—मनुष्य नहीं, पशु, तिर्यक् योनि-महामूर्ख।

दस्यु के अर्थ भी देखिए—

"दस्युर्दस्यतेरुपक्षयार्थात्। उपदास्यन्त्यस्मिन् रसाः इति, कर्माणि।"

(निरुक्त ७·२३)

दस्यु दस् धातु से बना है जिसका अर्थ उपक्षय करना, विनाश करना है।

जिसमें सब रस सूख जाएँ कर्म नष्ट हो जाएँ वह दस्यु है।

रसहीन, हृदयहीन। कर्म को बिगाड़ने वाला। खेती को नष्ट करने वाला। सुखाने वाला।

किन्तु इन मन्त्रों में और कहीं भी वेदों में यह नहीं लिखा मिलता कि दस्यु और पणि कोई जातियाँ थीं। और नाहीं कहीं पर यह लिखा है कि आर्य लोग बाहर से आए। संसार-भर के ऐतिहासिक विद्वान यह नहीं बता सके कि आर्य लोग जहाँ से आए उस देश वा प्रदेश का नाम आर्य साहित्य में यह लिखा है। और न यह बता पाते हैं कि इस विशाल देश का नाम उन आदिमवासियों ने क्या रखा था। वास्तव में इस देश के आदिमवासी, और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और आर्य का अर्थ है—गतिशील, ज्ञानी, कर्म में तत्पर कृषि कर्ता। सभ्य। इन कल्पनाकारियों की उड़ान है कि दस्यु, द्रविड़ लोग बैठी हुई चपटी नाक वाले थे अतः उन्हें आर्यों ने अनासः नाकरहित कहा। और उनकी बोली मुलायम थी इसलिए मीठी बोली वाला कहा। वा अनर्गल प्रलाप करने वाले झूठ। धातु मृधु—उन्दने, भिगो देने वाली जिसकी वाणी हो खुशामदी।

किन्तु मुंह पर मीठी बातें करने वाले अर्थात् बातों से क्लेदन करने वाले—तर कर देने वाले किस जाति वा वर्ग में नहीं होते ? इनकी कोई पृथक् जाति तो नहीं होती।

निकम्मे, असभ्य, हृदयहीन, स्वार्थी, बातून काले दिल के (कृष्णयोनीः) किस देश वा जाति में नहीं हैं ?

नासिकाहीन यदि चपटी नाक वालों को कहना था तो "अल्पनासः" कहा जाता। यहाँ तो अनासः शब्द से नाक का बिल्कुल ही सफाया दीख रहा है अर्थात् "नककटे"।

प्रयोजन यह है कि जिन्हें सुगंध-दुर्गन्ध का ज्ञान न हो। जो भले-बुरे की परख न कर सकें। विवेकहीन। 'अनासः' मुहावरा है जैसे अब भी बदनामी को नाक-कान कट जाना' कहते हैं।

इसके विरुद्ध वेद में अच्छे ज्ञानी लोगों के लिए शब्द आया है "अलिनासः" (ऋ० ७।१८।७) अर्थात् भौंरे जैसी नाक वाले अर्थात् जहाँ-जहाँ सुगन्ध मिले वहाँ वहाँ से ग्रहण करने वाले। तात्पर्य हुआ कि ज्ञान को संग्रह करने वाले सत्यान्वेषी।

पणि का अर्थ साधारण रूप में तो व्यापार करने वाला, व्यवहार करने वाला ही है जैसा कि निरुक्त में—"पणिर्वणिग्-भवति" "पणिः पणनात्" परन्तु वेदों में जहाँ-तहाँ पणियों की निन्दा है। जैसा कि नं० ७ में "पणियों के हृदयों को वश में करो" नं० ६ में "पणियों को वश में करो, दंड दो आदि वाक्य आते हैं। वहाँ पणि का अर्थ पणयः—कुसीदिनः—सूदखोर, ब्याज जीवी, "अराधसः" (नं० ६) दान से रहित कंजूस लोग है। वेदों में उदारता की प्रशंसा है। कंजूसी की निन्दा। वृहस्पति स्मृति में है कि जो धनी लोग सामाजिक सेवाओं में धन न लगायें राजा उनका सर्वस्व छीनकर उन्हें देश बाहर कर दे।

गीता भी कहती है :—

"अघंते भुञ्जते पापा ये पचन्त्यात्म-कारणात्" (२·१२)

वेद ने कहा—

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः···
केवलाघो भवति केवलादी
(ऋ० १०।११७।६)

अपने ही भोगों में धन खर्च करना अघ है। पाप है। यह बात आज भी है। कम्यूनिस्ट लोग धनियों को "वुर्जुआ" पूंजीवादी कहकर उनसे घृणा करते हैं। उनपर नियन्त्रण करते हैं। तो क्या 'वुर्जुआ' कोई अलग जाति है ? कम्यूनिस्ट भी रूसी और चीनी ही हैं और 'वुर्जुआ' भी। केवल व्यवहार का भेद है। मनो-वृत्ति में अन्तर है। इसी प्रकार पणि भी इसी देश के थे और आर्य भी। पणि भी जात्या आर्य थे। परन्तु वृत्त्या अनार्य थे। भोग-विलास में मस्त। पैसे के पुजारी। ऐसों को राजा वश में रक्खे और उचित ताड़ना भी करे। यहीं वेद ने समाज-नीति का उपदेश किया है। अज्ञानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निकम्मे, दुःशील, अव्रत सदाचारहीन, हुड़दंगे हो दस्यु हैं। ये कृष्ण योनि जन्म से काले अर्थात् कपटी हैं। वेद ने ही बता दिया कि आर्य और दस्यु जाति अलग-अलग जातियाँ नहीं थीं: — आध्यात्म में ये हृदय के भाव बुरे भाव हैं। चुमुरि, धुनि पिप्रु, नमुचि भी समाज के स्वार्थी बुरे लोग हैं और आध्यात्म में मोह के अनेक भेद हैं यथा—शुष्णाम्-शोषक, पिप्रुम्—अपना घर भरने वाले स्वार्थी, चुमुरिम्—परायामाल उड़ाने वाले, धुनिम्—भयकारक। इसी प्रकारनमूचि—घोर अज्ञान जो कठिनता से छूटे। अध्यात्म में यह सब बुरे भाव हैं और इन्द्र ज्ञान प्रकाशक ईश्वर है। "इन्धे भूतानीतिवा" (निरुक्त) जो प्राणियों को प्रकाश से चमका दे। इन्द्र जीव भी है, सूर्य भी, अग्नि भी और विद्युत भी। प्रत्येक प्रकाशमान वस्तु इन्द्र है। प्रकाश भौतिक भी और ज्ञानमय भी। निइन्धि दीप्तौ धातु से इन्द्र बना है। दीप्ति मान्।

'यो नो दासो आर्यो वा"

(ऋ० १०।३८।३)

जो हममें आर्य वा दस्यु हो।

यथा दासान्यार्याणि वृत्रा करो वज्रिन्

(ऋ० ६।२२।१०)

हे इन्द्र तुम जिस प्रकार दासों को आर्य बनाते हो।

उपर्युक्त प्रमाणों से सिद्ध है कि एक ही वर्ग में आर्य (श्रेष्ठ कर्मशील) और दस्यु (निकम्मे और असभ्य) होते थे। दस्यु सुधर कर आर्य बन जाते थे।

आज की ये बन्य जातियाँ भी आर्यों की सन्तान हैं। देखो ऐतरेय ब्राह्मण ((७-३-१२)—"**तस्यह विश्वामित्रस्यैक शतं पुत्रा आसन्, पञ्चाशदेव ज्यायांसो मधुच्छन्दसः, पञ्चाशत् कनीयांस। तद् ये ज्यायांसो न ते कुशलं मेनिरे, ताननु व्याजहारान्तान् वः प्रजाभक्षीष्टेति। —ऽन्ध्राः पुण्ड्राः शवराः पुलिन्दाः मूतिबा इत्युदन्ता बहवो भवन्ति वैश्वामित्रा दस्यूनां भूयिष्ठाः"**

(७।३।१८)

विश्वामित्र के १०१ पुत्र (शिष्य) थे। मधुच्छन्दा से ५० बड़े और ५० छोटे। उनमें से ५० बड़ों ने नियम पर चलकर शिक्षा प्राप्त करना अच्छा नहीं माना। उन्हें विश्वामित्र ने शाप देकर निकाल दिया। वे ही अंध्र, पुण्ड्र, शवर, पुलिन्द मूतिवा आदि अनेक प्रकार के दस्यु हो गए।

इस कथा से स्पष्ट है कि जिन लोगों ने जातीय नियम शिक्षा, और आचार का तिरस्कार किया परिश्रम से जी चुराया वे ही दस्यु (डाकू) लुटेरे प्रजा को भक्षण करने वाले बन गये। आज की वन्य जातियों को आदिम जातियाँ बताना राष्ट्र का घोर अनिष्ट करना है। अंग्रेजों ने यह चाल इसलिए चली थी कि जब उनसे कहा जाएगा। कि तुम विदेशी हो। निकलो भारत से। तो वे यहाँ से द्रविड़, कोल, भील, संथालों से कहलवा सकेंगे कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, कायस्थ आदि सब आर्य बाहर के हैं, ये भी यहाँ से बाहर निकलें। यह आवाज उठी भी और अब भी उठती है। भारत के बड़े-बड़े नेता सब अंग्रेजों के शिष्य थे और अंग्रेजियत के पोषण करने वाले। इन लोगों ने अंग्रेजों के ऐसे विचारों को स्वीकार करके भारत की राष्ट्रियता में छेद कर दिए। एक आर्य जाति के अनेक टुकड़े कर डाले।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चलती चक्की

जनसेवा करते रहो,
जब तक जी में जान।
कुर्सी को समझो सदा,
दो शरीर इक प्राण।
दो शरीर इक प्राण,
रहो सत्ता के सेवक।
छोड़ देश की फिक्र,
बनो निज नौका खेवक।
देकर निज दारिद्र्य,
विभव जनता का लेता।
वह सच्चा स्थितप्रज्ञ,
जयी जेता जन नेता।
रूखा सूखा खायकर,
मत कोरा जल पी।
छीन परायी सम्पदा,
ठंडा करले जी।
ठंडा करले जी,
न पराया कोई भैया।
जो कुछ है अपना है,
जग में रूप-रुपैया।
भरा जा सके जितना,
इनसे घर को भरलो।
दो दिन का है जीवन,
करना हो सो करलो।

—धर्मेन्द्र शर्मा

वृत्र नाम भी किसी व्यक्ति का नहीं है। वृत्र मेघ का नाम है और इन्द्र सूर्य का। सब ही वैदिक लोगों की यह मान्यता है। निरुक्त (२।१७) के अनुसार "वृत्रं वृणोतेर्वा, वर्त्ततेर्वा, वर्धतेर्वा" यदवृणोत्तद् वृत्रस्य वृत्रत्वमिति विज्ञायते।"

जो छा जाता है। वर्तमान होता है। बढ़ता है वह वृत्र है। "वृत्रहनम्" का पर्याय निरुक्त (७।२३) में "मेघहनम्" दिया है। वृत्र कोई व्यक्ति विशेष होता तो उसके लिए वेदों में बार-बार 'वृत्राणि" नपुंसक लिंग बहुवचन कैसे आता। यदि यह ऐतिहासिक युद्ध होता तो वृत्र को कहीं इन्द्र मारता है, कहीं अग्नि मारता है—"इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते" (ऋ० ६।५६।२) "अग्निर्वृत्राणि जंघनत्" (ऋ० ६।१६।३४) वस्तुतः यहाँ इन्द्र और अग्नि दोनों नाम सूर्य के हैं और वृत्राणि बहुत से मेघ हैं। निरुक्त में आता है—"त्वाष्ट्रोऽसुर इत्यैतिहासिकाः वृत्र त्वष्टा का पुत्र एक असुर है ऐसा ऐतिहासिक लोगों का मत है। तो यह इतिहास क्या है? (देवी भागवत स्कन्द २ अध्याय २)

"कृतेहोमेऽष्ट राजंतु सन्दीप्ताच्च विभावसोः
प्रादुर्बभूव तरसा पुरुषः पावकोपमः।
तं दृष्ट्वाग्रे सुते त्वष्टा तेजो बल समान्वितम्
वेगात् प्रकटितम् वह्नेः दीप्यमानमिवानलम्
उवाच वचनं त्वष्टा सुतं वीक्ष्य पुर स्थितम्
इन्द्रोशत्रो विवर्धस्व प्रतापात्तपसो मम।
इत्युक्ते वचने त्वष्टा क्रोध प्रज्वलितेन च
सोऽवर्धत दिवंस्तब्ध्वा वैश्वानर समद्युतिः।
जातः स पर्वताकारः काल मृत्यु समः स्वराट्
किं करोमीति तं प्राह पितरं परमातुरम्।
कुरु में नामकंनाथ कार्य कथय सुव्रत
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य त्वष्टा पुत्रस्य पेशलम्।
प्रत्युवाचाति मुदितस्तं सुतं पर्वतोपम्
वृजिनात्त्रातु मधुना यस्मायच्छक्तोऽसि पुत्रक
तस्माद् वृत्र इतिख्यातं तव नाम भविष्यति।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

त्वष्टा ने ८ रात्रियों तक यज्ञ किया तब अग्नि से एक पुरुष पैदा हुआ। उसको देखकर त्वष्टा ने कहा, बढ़ो। वह बढ़कर पर्वताकार हो गया। सारे द्युलोक पर छा गया। त्वष्टा ने उसका नाम करण किया किन्तु वृजिन अर्थात् दुःख से रक्षा करेगा अतः तेरा नाम वृत्र है।

"वृजिनात त्रायते इति वृत्रः। यह पौराणिक नियुक्ति हुई।

अब इस कथा को और इससे पहली विश्वरूप की कथा को पढ़कर क्या कोई बुद्धिमान यह समझ सकता है कि यह घटनात्मक मानवी इतिहास है पुराणों की इन कथाओं से स्पष्ट है कि यह आलंकारिक इतिहास है। निरुक्त कहता है—

"तजोपमार्थेन युद्ध वर्णाभवन्ति"

रूपक और उपमानों में ये युद्ध वर्णन (इन्द्र—वृत्र युद्ध, शम्बर—इन्द्र युद्ध) होते हैं। वस्तुतः नहीं। वृत्र बादल हैं जो अग्नि अर्थात सूर्यताप से पैदा होता है। त्वष्टा—सूर्य ८ मास यज्ञ करता है अर्थात धरा को तपाता है तब वृत्र (मेघ) पैदा होता है और आकाश में छा जाता है। वेद स्वयं ही वृत्र को मेघ बता रहा है :—

"अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां काष्ठानां मध्येनिहिते शरीरम्।

वृत्रस्य निरायं विचरन्त्यापो दीर्घतम आशयदिन्द्रशत्रुः।" ऋ० १। ३२। १०)

न ठहरने वाले चंचल जलों में जिसका शरीर निहित है। ऐसे वृत्र के झुके हुए भाग में जल विचर रहे हैं। इन्द्र-शत्रु सूर्य विरोधी वृत्र ने घोर अंधेरा कर रखा है।

वेद से स्पष्ट हो गया कि वृत्र बादल ऐतिहासिक रूपक वाली कथा से भी पता चल गया कि वृत्र बादल है।

इसी प्रकार शम्बर निघंटु वैदिक कोश में जल का नाम है। आधि दैविक अर्थों के अनुसार यह वह वर्णन है जो आदि सृष्टि में पृथिवी से कुहरा उठता था और द्युलोक को ढकने लगता था। सूर्य की किरणों से (इन्द्र वज्र से) यह फिर खंडित होकर धराशायी हो जाता था। यही विश्व रूप था, वृत्र था, शम्बर था।

आध्यात्मिक पक्ष कुहरा, धुंआ, नीहार ओस यह सब तमोगुण के रूपक हैं। इन्द्र सूर्य, अग्नि, प्रकाश, यह सब ज्ञान के लिए आते हैं। आज भी लोक भाषा में भी ऐसे मुहावरे हैं :—

"सफाइयाँ हो रही हैं जितने दिल उतने ही मैले हो रहे हैं।

जहाँ में छा जाएगा अंधेरा अगर यही रौशनी रहेगी॥"

यहाँ सफाई—ऊपरी लम्बी-चौड़ी बातें, दिल मैले—दुराचार से भरे कपटी अँधेरा—भ्रष्टाचार, अन्याय, पाप। रोशनी—सभ्यता, नीति। इसी प्रकार वेद काव्य है। उसका अध्ययन काव्य की रीति और लक्षण, व्यंजना, ध्वनि को समझकर होना चाहिए। यदि यह वास्तविक घटना है तो शम्बर के कहीं तो सौ नगर लोहे के, कहीं पत्थर के (अश्मन्वती) और कहीं वृत्र एक, कहीं निन्यानवे। कहीं शम्बर की पुरियाँ भी सौ हैं, कहीं निन्यानवें।

"नव यदस्य नवतिं च भोगान्"

(ऋ० ५। २९। ६) क्यों कहा गया।

वस्तुतः रूपक अनेक प्रकार से बाँधें जा सकते हैं, वास्तविक ऐतिहासिक घटना नहीं। वृत्राणि बहुवचन नपुंसक लिंग क्यों प्रयुक्त हुआ? कहीं नगर लोहे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के कहीं पत्थर के, कहीं सौ कहीं निन्यानवे इसका शास्त्रीय परम्परा से पुष्ट होता हुआ समाधान, इन पाश्चात्य पंडितों के पुजारियों के पास नहीं है। पूर्वापर अध्ययन से आर्ष ग्रन्थों और पुराणों के पढ़ने से, वेदों के आलंकारिक-वर्णन समझने से इन यूरोपीय वेदानुसंधान करने वालों का विचार रूप वृत्रासुर सुसंगत तर्क रूपी वज्र से नष्ट हो जाता है।

कैसा अन्धेर है कि वेदों में तो ये आर्यों का इतिहास बताते हैं और रामायण महाभारत जो वस्तुतः हमारा इतिहास है उनको आलंकारिक कथाएं कह रहे हैं। क्योंकि इस प्रकार आर्यों का मनोबल गिराना उन्हें अभीष्ट है और हमारे दास मनोवृत्ति वाले, आत्महीनता युक्त नेता और विद्वान बिना पढ़े लिखे एवं बिना सोचे-विचारे इनका अनुसरण कर रहे हैं। भारतीय राष्ट्रीयता को इससे अपार क्षति पहुँचती है। विश्वामित्र के ही पचास पुत्रों की सन्तान अपने को आज अहिन्दू अनार्य और आदिमवासी बता रही है। वस्तुतः कोई न आदिमवासी है न बाहर से आए हैं। सब भारतीय ऋषि सन्तान हैं।

"हमारी जन्म भूमि है यहीं
कहीं से हम आए थे नहीं ॥
आर्य हो, द्रविड़-दस्यु हो, दास
सभी का यही सनातन वास ॥
फ़कत गुण कर्मों का है भेद
बताते यही हमारे वेद ॥"

—:o:—

लोकमान्य तिलक बम्बई विधान-सभा के सदस्य हो गए थे। उनके एक मित्र ने उनसे पूछा, "तिलकजी, विधान-सभा में आप अपनी पुरानी पोशाक में तो गए होंगे, पर जूते बाहर सीढ़ियों पर ही उतार देने पड़े होंगे।"

लोकमान्य ने तपाक से उत्तर दिया, "तो क्या हुआ ! हम लोग पेशवा के समय में भी अपने जूते सभा-द्वार के बाहर छोड़ जाते थे। अब एक महत्त्व-पूर्ण बात यह हो गई है कि भारत के जूतों की रक्षा गोरे सिपाही करेंगे— और पूना के एक मराठे को सबसे पहले ऐसा कराने का गौरव प्राप्त होगा।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लाल अंगारों की मुस्कान में

—श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

"मैं आपकी शरण आया हूं महाराज।"

रणथम्भोर के राजा हमीर अपने दरबार में बैठे अपना राजकाज देख रहे थे कि किसी ने पुकारा—"मैं आपकी शरण आया हूं महाराज!"

हमीर ने आंखें ऊपर उठाईं, तो एक बहादुर मुसलमान उसके सामने। सिर उसका झुका, गला उसका व्यथा से भर्राया और मुद्रा उसकी पीड़ित!

"कौन हो तुम?" हमीर ने पूछा।

"महाराज! मैं दुखिया हूं, मेरे प्राण संकट में हैं, आपकी शरण आया हूं!" आगन्तुक ने कहा।

आगन्तुक की पूरी कहानी यों थी "मेरा नाम माहमशाह, काम सिपाहीगिरी। बादशाह अलाउद्दीन खिलजी का खादिम। एक मामूली बात पर बादशाह नाराज और मेरे लिए फांसी का हुक्म। वे घड़ियां नजदीक कि जब फांसी का फन्दा दम घोंटकर मेरी लाश को चील और कुत्तों के लिए एक स्वादिष्ट नाश्ते की तरह फेंक दे कि मैं जेल से फरार और अपने प्राणों की रक्षा के लिए यों आपकी शरण में हाज़िर—मेरी रक्षा कीजिए महाराज!"

हमीर ने गौर से माहमशाह को देखा। माहम बहुत घबराया हुआ था। "दिल्ली और रणथम्भोर के बीच में तो राजपूतों के कई राज्य हैं; तुम उनमें क्यों नहीं गए माहम?" हमीर ने गंभीरता से पूछा।

और भी दीन होकर माहम ने कहा—महाराज, मैं सबके दरवाजे गया, सबने मुझे सहानुभूति दी, पर कोई शरण न दे सका; क्योंकि मैं दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी का भगोड़ा हूं और मुझे शरण देकर कोई उन्हें नाराज करना नहीं चाहता।"

हमीर ने अपने सलाहकारों की ओर देखा और उन्हें अनुत्साहित पाया। उनकी राय थी—"महाराज, माहमशाह की तलवार आज आपके द्वार शरणार्थी है, पर कल तक वह हमारे खून की प्यासी थी। हम उसे अपनी छाया में लें, दिल्ली के तख्त की लपलपाती क्रोधाग्नि को न्यौता क्यों दें?"

"यह दिल्ली के तख्त की लपलपाती क्रोधाग्नि को न्यौता देने का सवाल नहीं है सरदारो, यह कर्तव्य का प्रश्न है, आन का प्रश्न है। जब माहम इस द्वार से निराश लौटेगा, तो स्वर्ग में हमारे पूर्वज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या सोचेंगे ? क्या उस दिन उन्हें स्वर्ग के सुख-साजों में कांटों की चुभन का अनुभव न होगा ?" हमीर ने आवेग में पूछा।

धीमे हो सरदारों ने कहा—"महाराज, आपकी बात परम पवित्र है, पर कर्तव्य की भी तो एक सीमा है !"

"कर्तव्य की सीमा ?" भड़ककर हमीर ने पूछा—"कर्तव्य की सीमा है कर्तव्य और कर्तव्य की सीमा है कर्तव्य का पालन। कर्तव्य के पालन में सुख मिलेगा या दुःख, जय होगी या पराजय, यह दूकानदारों की वृत्ति राजपूतों को शोभा नहीं देती। माहम शरणार्थी है, शरणार्थी की रक्षा राजपूत का कर्तव्य है। यह कर्तव्य हमें पूरा करना है. फिर इससे दिल्ली का बादशाह नाराज हो या दुनिया का बादशाह !"

सामन्त-सरदार अब महाराज की भावधारा में अवगाहन कर, बुद्धि से दूर भावना के क्षेत्र में पहुंच गए थे। उनके मुंह से निकला—"धन्य महाराज !"

हमीर ने अपने सिंहासन से उठ माहम को थपथपाया और छाती से लगा लिया। हमीर इस समय आसमान थे, तो माहम धरती। दोनों का यह मिलन देख, रणथम्भोर के सूखे-ठूंठे वृक्षों में नई कोंपलें फूट आईं।

हमीर ने कहा—"माहमशाह, रणथम्भोर अब तुम्हारा ही घर है। आराम से यहां रहो और विश्वास रखो कि अब किसीकी हिम्मत नहीं कि तुम्हारी तरफ तिरछी आंखों से देखे। कोई कष्ट हो, तो हमें कहना—जाओ !"

(२)

कानों-कान यह उड़ती खबर दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी तक पहुंची, तो वह तमतमा उठा—हमीर की यह हिमाकत कि मेरे चोर को बगल में ले।

"क्या तुम नहीं जानते हमीर, जो तुमने माहम को यों अपनी छत दी ? खैर, मैं भूलों को माफ करना जानता हूं। कोई बात नहीं—माहम को अपनी देख-रेख में मेरे सुपुर्द करो और अपने कसूर की माफी मांगो !" अलाउद्दीन का यह सन्देशा हमीर के पास पहुंचा, तो वह मुस्कराया और उसने बादशाह को लिखा—"माहम को शरण दी है कोई नौकर नहीं रखा और अपना सर्वस्व लुटाकर भी शरणागतों की रक्षा करना मेरी जाति का संस्कार है। सपने में भी उम्मीद न रखिए कि माहम को मैं आपके दरवाजे लाऊंगा और जो मुनासिब समझें सो कीजिए !"

जवाब क्या था, एक पलीता था, जिसने खिलजी के बारूद में आग लगा दी और उसने कुछ दिन बाद ही अपनी फौजों के साथ रणथम्भोर का किला घेर लिया।

"लड़ाई-झगड़े से क्या फायदा हमीर, ला माहम को मुझे सौंप दे !" खिलजी का यह आखिरी सन्देशा था।

"लड़ाई से मैं नहीं डरता और जीवन की आखिरी घड़ी तक माहम की रक्षा करूंगा !" हमीर का यह आखिरी उत्तर था।

दूसरे दिन रणदुन्दुभि बज उठी। ऊंची पहाड़ी पर बना रणथम्भोर का किला और उसके चारों ओर फैली शाही फौजें। घमासान लड़ाई, जिसमें एक तरफ शक्ति का दर्प, तो दूसरी तरफ गैरत की पच। एक तरफ अपने बादशाह के लिए लड़नेवाले फौजी, तो दूसरी तरफ अपनी बात के लिए मर मिटनेवाले सिपाही। एक तरफ भरपूर साधन, तो दूसरी ओर भर-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पूर आन। लड़ाई क्या—एक बात की बाजी और यह बाजी, जिसका निशाना एक आदमी के प्राण और इस एक प्राण के लिए हज़ारों प्राण, सरसों के एक दाने की तरह, हथेली पर।

दोनों तरफ हजारों योद्धा काम आए। बादशाह की ताकत जितनी छीजती, दिल्ली उसे पूरा कर देती, पर हमीर की शक्ति-धारा की जो लहर बह जाती, बह जाती—वह फिर न लौटती। हर टूटती तलवार सौ को निन्नानवे करती और हर गिरता सिपाही हजार को नौ सौ निन्नानवे—व्यय के रास्ते खुले हुए थे, तो आय के बन्द। कारूंका खजाना और कुबेर का कोष भी यों कब तक टिक पाता; रणथम्भोर की सैन्य-शक्ति और खाद्य-सामग्री कम पड़ चली!

हमीर उस दिन कुछ सोच रहे थे कि माहमशाह आकर खड़े हो गए। "कहिए शाह साहब, क्या बात है?" हमीर ने उनसे कहा।

"अर्ज यह है कि मेरी वजह से आपका बहुत नुकसान हो चुका। मैं आपकी मुसीबतों को और ज्यादा बढ़ाना नहीं चाहता और बादशाह के पास जाने की इजाजत लेने आपकी खिदमत में हाजिर हुआ हूं।" माहमशाह ने बहुत ही नम्र स्वर में कहा।

हमीर ने पूरी गम्भीरता से कहा—"शाह साहब, यह लड़कों का खेल नहीं, युद्ध है। फिर क्या आप नहीं जानते कि मैं राजपूत हूं। जो वचन आपको दे चुका हूं, उसे मरते दम तक निबाहूंगा। इस लड़ाई में आपकी बहादुरी के चमत्कार देखकर मैं बहुत खुश हूं। हार-जीत तो बहादुर की किस्मत के दो सितारे हैं, इनकी फिक्र न कीजिए!"

लड़ाई चलती रही, सामान और सिपाही घटते रहे। एक दिन भण्डारी ने खबर दी—"आज खाने का सामान समाप्त है।

रणथम्भोर के किले में एक सभा हुई कि अब क्या हो? माहमशाह ने बहुत खुशामदें कीं, वह बहुत गिड़गिड़ाया कि उसे बादशाह को सौंपकर सुलह कर ली जाय, पर उसके प्रस्ताव का समर्थक वहां कोई दूसरा न था। सचाई यह है कि हमीर और उसके साथियों के सामने यह प्रश्न ही न था कि हम कैसे बचें? उनकी विचार-दिशा तो केवल यह थी कि अब हम कैसे लड़ें? भावुकता का ऐसा ज्वार विश्व के इतिहास में शायद ही कहीं और आया हो?

फैसला हुआ कि कल किले का द्वार खोल दिया जाय और जमकर युद्ध हो—इस युद्ध का स्पष्ट अर्थ था आत्माहुति, सर्वस्व-समर्पण। जीत की कामना सिपाही को उत्साह देती है, तो विजय की आशा उसे बल, पर ये कामना और आशा के झूले पर इधर से उधर और उधर से इधर झूलने वाले सिपाही न थे—इन्हें झूलना नहीं झूमना था, इन्हें कुछ बूझना नहीं, बस जूझना था। क्या सचमुच ये गीता में वर्णित निष्काम कर्मयोग के सर्वोत्तम जीवित स्टैच्यू न थे?

और किले में यौवन की किलकारियां भरतीं, इन स्त्रियों का क्या होगा? उन्होंने फैसला किया कि हम किले का द्वार खुलने से पहले जौहर करेंगी!

अब वे सब निश्चिन्त थे; जैसे उन्हें जो काम करना था, कर चुके थे। रात को ये सब सो रहे थे, सुबह जल्दी उठने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के लिए और सुबह इन्हें जल्दी उठना था—हमेशा को सोने के लिए ! ऐसी जीवन्त नींद रात के सितारों ने फिर नहीं देखी, यह वे हमेशा आपस में अब भी कहा करते हैं।

पौ फूटी, तो सब जागे और पुरुषों ने नित्य कर्मों से निपट, सबसे पहले एक विशाल चिता सजाई। स्त्रियों ने पूजन किया, कीर्तन किया। वे अपने-अपने पतियों से मिलीं। पुरुषों ने उन्हें प्यार से थपथपाया, उन्होंने उनके पैर छुए। ओह, आज वे अपने सर्वश्रेष्ठ शृंगार में थीं, जैसे जीवन की सर्वोत्तम यात्रा पर आज उन्हें जाना था और यों वे अपनी दर्ददीप्त गति से चिता की ओर चलीं—जैसे स्वयम्वर के बाद दुलहनें अपने रथ की ओर बढ़ रही हों !

यह लो, वे चढ़ गईं चिता पर और बैठ गईं पास-पास अपने को संभाले संवारे। कुछ ने सुना, कुछ ने कहा—"अच्छा अब स्वर्ग में मिलेंगे।" और चिता की लपटों में घिर गईं।

किले का द्वार खोल दिया गया और रणथम्भोर के योद्धा रण में कूद पड़े। रण था यह, दिल्ली की फौजों के लिए, रणथम्भोर वालों के लिए तो यह आत्मदान का यज्ञ ही था। वे यज्ञ की श्रद्धा से युद्ध में उतरे। माहम और हमीर साथ-साथ आगे बढ़े और काल बनकर बरसे। दूसरे सिपाही भी खून की आखिरी बूंद तक लड़े !

क्या इन योद्धाओं की रक्त-पिपासा समाधिस्थ योगियों की तरह आत्मलीन थी। ओह ! रणथम्भोर की ये शहादतें, ये बलिदान, ये कुर्बानियां; जो वीरता के इतिहास में अपना जोड़ नहीं रखती और आज सदियों के बाद भी जिनसे अगरबत्तियों-सी जीवन के सौरभ की भीनी एवं प्रेरक गन्ध आ रही है।

दुनिया की अधूरी भाषा में आज का विजेता अलाउद्दीन खिलजी अपने जयकार सुनता रणथम्भोर के किले में घुसा, तो वह उसकी आत्मा के चारों ओर गूंजती एक हंसी से हकबक हो गया !

यह हंसी उस दहकती चिता के लाल अंगारों की थी, जो कह रही थी—"मूर्ख अलाउद्दीन, तू रणथम्भोर की ईंटों को ही जीत सका, उसकी इज्जत, उसकी गैरत और उसकी वीरता सदा अजेय है !"

और रणथम्भोर के खण्डहर आज भी, उस अजेय वीरता के गान अंधेरी रातों में आकाश के तारों को सुनाया करते हैं !

मेरे सपनों का स्वराज्य

हम एक ऐसा स्वराज्य चाहते हैं जिसमें सूखी रोटी न मिलने के कारण सैकड़ों मनुष्य मरते न हों, पसीना बहाकर पैदा किया हुआ अनाज किसानों के बच्चों के मुंह में से छीन कर विदेश में न ले जाया जाता हो, जिसमें लोगों को कपड़े के लिए पराए मुल्कों पर आधार न रखना पड़ता हो, थोड़े-से विदेशियों की सुविधा की खातिर राजकाज विदेशी भाषा में न चलता हो, हमारे विचारों और शिक्षा का माध्यम विदेशी न हो।

—बल्लभभाई पटेल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह देश है हमारा, हम देश के सिपाही

दुनिया के रंजोगम को, हमने सदा सहा है,
इन्सानियत का हमने, ही पाठ है पढ़ाया,
इतिहास साक्षी है, संसार जानता है,
वीरानियों को हमने, गुलजार है बनाया,
रहते सदा रहे हैं, मिल-जुल के भाई-भाई।
यह देश है हमारा, हम देश के सिपाही॥

संकट समय कभी भी, पीछे न हम हटे हैं,
सौ बार दुश्मनों ने, यूं गोलियां चलाई,
वह याद आज भी हैं, आंखों के सामने है,
ब्यालीस का नजारा, नेफा की वह लड़ाई,
हंस-हंस के छातियों पर, गोली हमीं ने खाई।
यह देश है हमारा, हम देश के सिपाही॥

साहस से सत्य पथ पर, सीखा सदा है बढ़ना,
चिन्ता नहीं है खुद ही, मंजिल पुकार लेगी,
मजहब ने कब सिखाया, फिरकापरस्त होना,
'गद्दार, देश-द्रोही आवाज यह उठेगी,
हम एक हैं, रहेंगे, हिल-मिल के भाई-भाई।
यह देश है हमारा हम देश के सिपाही॥

—विजय भाई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बच्चों के लिए

आइए ! हँस लें

मैनेजर : कहिये साहब ! हमारे होटल में आपको रात नींद तो अच्छी आई न ?

यात्री : नींद ! आप नींद की कहते हैं, सारी रात पलक तक तो झपकाई नहीं !

मैनेजर : अब देखिए, यह तो गलती सरासर आपकी है। अगर आप सोना चाहते हैं, तो पलकें जरूर झपकानी पड़ेंगी।

०

यात्री : क्या मुझे आपके होटल में पूरा आराम मिलेगा।

मैनेजर : साहब, हमारे यहां आप अपने को बिल्कुल अपने घर में महसूस करेंगे।

यात्री : भाड़ में जाय आपका होटल ! अगर मुझे यहां भी वही दिक्कतें रहीं, तो फिर घर ही क्या बुरा था।

०

"सुनाओ भाई, तुम्हारे उस मित्र के क्या हालचाल हैं जिसने 'पैदल चलने वालों के लिए हिदायतें' नामक किताब लिखी थी ?"

"पुस्तक प्रकाशित होने से पूर्व ही वह बेचारा एक बस से कुचलकर मर गया।"

०

पति : तुम बेवकूफों की तरह बात क्यों कर रही हो !

पत्नि : इसलिए कि कम-से-कम तुम अपनी तरह की बात तो समझ सको।

"फर्श पर सामान रखना मना है, श्रीमान ! यह अटैची यहां से हटाकर छत पर रखवा दीजिए"—रोडवेज के कंडक्टर ने बस छूटने से पहले यात्री से अनुरोध किया। "मैं नहीं रखवाऊंगा"—यात्री ने एक क्षण निगाह घुमाकर कंडक्टर को देखा, फिर अखबार पढ़ने में मशगूल हो गया।

झल्लाए कंडक्टर ने गुस्से से कहा, "ये सूट-बूट का रोब दूसरे पर गालिब कीजिएगा। बस पर सफर करना है, तो सरकारी कानून मानना होगा।"

यात्री कंडक्टर की अनसुनी कर अखबार पढ़ने में तल्लीन रहा, तो वह आग-बबूला हो गया, "वाह साहब आपने तो ऐसी चुप्पी साध ली गोया मैं पागलों की तरह बक रहा हूं।"

यात्री एक चुप हजार चुप !

"हद हो गई, मिस्टर ! मैं एक, दो, तीन बोलता हूं, अगर इस बीच आपने अटैची न हटाई, तो मैं इसे उठाकर बाहर फेंक दूंगा।"

यात्री मूर्तिवत मौन। क्रुद्ध कंडक्टर ने एक, दो, तीन गिनने के बाद आवेश से अटैची उठाकर बाहर फेंक दी और कहा, "आप चाहे जो हों मेरी बला से, पर इससे आपको एक सबक तो मिल ही गया।"

यात्री ने अब लंबा मौन तोड़ते हुए नम्र स्वर में कहा, "भैया, मुझे कोई सबक नहीं मिला। वह अटैची मेरी नहीं थी।"

—"एकाग्रता से ही विजय प्राप्त होती है।"

—चार्ल्स वक्सरन

—"मनुष्य जितना ही निःस्वार्थ हो उतना ही महान है।"

—आक्सर वाईल्ड

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रकाशवती शास्त्री

देवव्रत का व्रत

आज राजा शान्तनु के घर में मंगल-गान हो रहा है। आनन्द के बाजे बज रहे हैं। सारा नगर ध्वज पताकाओं से सुसज्जित है ब्राह्मण लोग स्वस्तिवाचन कर रहे हैं। नगर का प्रत्येक नर-नारी आनन्द और उल्लास का अनुभव कर रहा है। बच्चे बूढ़े सभी रंगबिरंगे वस्त्रों से विभूषित होकर राजमहल में बधाई देने के लिए जा रहे हैं सभी के मुखमण्डल आनन्दरीत के द्वारा खिलाए हुए कमलों के समान शोभायमान हो रहे थे। क्यों न हो! आज उनके प्रिय महाराज शान्तनु के घर में कुल का दीप जगा है। कुरुवंश को यशस्वी बनाने वाला राज्य का उत्तराधिकारी जन्मा है।

महाराज शान्तनु की प्रसन्नता का क्या कहना! दोनों हाथों से रत्न लुटा रहे हैं।

महारानी गंगा महल में पंलग पर बैठी हुई अपनी गोदी में लेटे लाल को निहार रही है। हे प्रभो। मेरा यह लाल ऐसा तेजस्वी, बलवान, बुद्धिमान, विद्वान् और ऊंचे चरित्र वाला हो कि इसके द्वारा इसके वंश और देश की कीर्ति युगों-युगों तक जागृत रहे। इसका जीवन जन-जन का पथ प्रदर्शक हो। संसार के नर-नारी सदा इसका नाम गौरव और आदर के साथ स्मरण करें। पर पर यह होगा कैसे? केवल कहने से! केवल प्रार्थना करने से! नहीं ऐसा असंभव है, ऐसी प्रार्थना तो प्रत्येक माता कर सकती है और करती भी होगी। तो फिर! तो फिर मुझे कुछ करना होगा, मुझे व्रत लेना होगा, हां व्रत, दृढ़ संकल्प, त्याग, त्याग की भट्टी में तप कर ही विचार संकल्प बनता है और तभी, तभी वह अपना चमत्कारी प्रभाव भी दिखाता है। तो मुझे यही करना होगा। व्रत हां व्रत एक संतान का व्रत, पर क्या अकेली ही यह व्रत धारण करलूं? अपने पति की, बालक के पिता की बिना अनुमति के? क्या यह न्याय है? युक्ति संगत है? तो अनुमति ले लूं? पर कहीं उन्होंने नहीं माना? तो मेरी महत्त्वाकांक्षा बीच में रह जाएगी, मेरा कर्तव्य अधूरा ही रह जाएगा। नहीं मैं एकाकिनी ही व्रत धारण करुंगी मैं जननी ही नहीं माता भी हूं। बालक का निर्माण करना मेरा ही कर्तव्य है।

सांयकाल को राजा शांतनु महल में पधारे। महारानी के व्रत की सूचना पाकर आग बबूला हो गए। मेरे ही घर में मेरी अवहेलना? तो जाओ मैं तुम्हारे इस व्रत में कोई सहयोग नहीं दूंगा। राजा के घर में तो कई संतानें होनी ही चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजा शांतनु के बचन सुनकर महारानी घबराई नहीं महाराज पर क्रोधित भी नहीं हुई परन्तु अपने संकल्प पर दृढ़ रही। "नहीं निश्चितधिय अर्थात् विरभीत" दृढ़ निश्चय वालों को अपने उद्देश्य से कौन विचलित कर सकता है ?

महारानी गंगा नवजात शिशु को गोद में लेकर ऋषियों के आश्रय में चली-गई। वहां रह कर पूर्ण निष्ठा के साथ उसने बालक का पालनपोषण ही नहीं किया उच्च कोटि के विद्वानों से शास्त्र विद्या और शस्त्रविद्या की शिक्षा भी दिलाई वह स्वयं भी विदुषी थी अतः उसने बच्चे को उत्तम शिक्षा दी, उसके शरीर, मन और आत्मा का विकास किया। अपनी कठिन तपस्या से माता ने बालक को बलवान विद्वान् और श्रीमान बनाया। बालक का नाम वेदव्रत रखा।

कई वर्षों के पश्चात् युवक देवव्रत वन में धनुर्विद्या का अभ्यास कर रहे थे। उनके तेज और सौंदर्य से सारी दिशाएं आलोकित हो रहीं थीं। अकस्मात् राजा शांतनु भ्रमण करते हुए आ पहुंचे। युवक के रूप सौंदर्य के साथ-साथ उसके धनुष-कौशल को देखकर मुग्ध हो गए। जड़वत खड़े-खड़े उसको निहार रहे थे। उनके आश्चार्य और कुतूहल की सीमा न थी। यह युवक किस कुल का भूषण है ? इसके भाग्यशाली पिता कौन है ? कौन सी स्नेहमयी विदुषी जननी ने इसका निर्माण किया है ? कौन से विज्ञ गुरुओं ने इसको इतनी उक्च कोटि की शिक्षा दी ? ऐसे अनेकों ही प्रश्न महाराज के मस्तिष्क को आन्दोलित कर रहे थे। पर उत्तर दे तो कौन दे। युवक अपने अभ्यास में इतना तल्लीन था कि कोई योगी भी अपनी समाधि में क्या होगा ? कोई दूसरा व्यक्ति वहां दिखाई ही नहीं दे रहा था। एक अज्ञात बंधन में महाराज उस युवक देवव्रत को एकटक निहारते ही रहे, निहारते ही रहे, एक समाधिस्थ योगी की भांति।

कुछ समय पश्चात् अकस्मात् उनकी ध्यान निद्रा को भंग करती हुई वनदेवी सी एक सुंदरी वहीं पर आ पहुंची। शांतनु का आश्चर्य और भी बढ़ गया। उस आलोकमयी रमणी ने आगे बढ़ कर महाराज के चरणों में प्रणाम किया और मधु-मिश्रित वाणी में बोली—आर्यपुत्रः क्या भूल गए अपनी इस दासी गंगा को ?

महाराज शान्तनु मानो गहरी निन्द्रा से जागे हों। आंख मल-मल कर देखने लगे। क्या यह स्वप्न है ? या जागरण ? गंगा यहां कैसे ? और यह युवक ? कुछ स्पष्ट नहीं हुआ। जब महाराज की स्मृति लौटी तो बोले—गंगा, तुम ठीक कहती हो। वर्षों के व्यवधान ने मेरी मनःदृष्टि का विस्मृति का आवरण डाल दिया था पर तुम्हारे शब्दों ने उस आवरण को छिन्न-भिन्न कर दिया है। अब मैं जान गया हूं कि तुम मेरी ही प्रिया हो, मेरी ही पत्नी हो, मेरी ही रानी गंगा हो।

गंगा बोली—पत्नी नहीं, तुम्हारे पुत्र की माता हूं, इसकी निर्माता हूं। जिस युवक को आप इतने मोहित होकर देख रहे हैं यह आप का ही पुत्र देवव्रत है। और आप को स्मरण होगी इसकी जन्मकथा और मेरे गृहत्याग की कथा। मैंने ऋषियों के आश्रमों में रहकर इस बालक को पाला है इसका सम्यक् निर्माण किया है। इसको राज्योचित उच्च कोटी की शिक्षा दिलाई है। यह है आप की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धरोहर, अब मैं आपका पुत्र आप को सौंपती हूं। मेरा कर्तव्य पूरा हुआ। आप इसे लेकर सानन्द अपने घर जाइए। इन शब्दों के साथ ही वह आदर्श माता वहां से अन्तर्ध्यान हो गई। महाराज शांतनु के मन के भाव मन में ही रह गए। वह कुछ भी न कह सके। चाहते हुए भी न कह सके। उस स्वर्गीय ज्योति ने उसे कुछ कहने का अवसर ही नहीं दिया।

आगे चल कर यही देवव्रत ब्रह्मचारी भीष्म के नाम से विख्यात हुआ।

त्याग

त्याग क्या है ? अहंकारयुक्त जीवन को त्याग देना। निःसंशय और निःसन्देह अमर जीवन व्यक्तिगत और परिच्छिन्न जीवन को खो डालने से मिलता है।

त्याग का आरम्भ सबसे निकट और सबसे प्रिय वस्तुओं से करना चाहिए। जिसका त्याग करना आवश्यक है, वह है मिथ्या अहंकार अर्थात् 'मैं यह कर रहा हूं', 'मैं सतती हूं', 'मैं भोक्ता हूं' यही भाव हममें मिथ्या व्यक्तित्व को उत्पन्न करते हैं— इनको त्याग देना होगा।

त्याग आपको हिमालय के घने जंगल में जाने का आदेश नहीं देता, त्याग आपसे कपड़े उतार डालने का आग्रह नहीं करता, त्याग आपको नंगे पांव और नंगे सिर घूमने के लिए नहीं कहता।

त्याग न तो अकर्मण्य, लाचारी और नैराश्यपूर्ण निर्बलता है। और न दर्पपूर्ण तपश्चर्या ही। ईश्वर के पवित्र मन्दिर अर्थात् शरीर को बिना प्रतिरोध मांसाहारी निर्दय भेड़ियों को खाने देना कोई त्याग नहीं है।

ईश्वरत्व और त्याग पर्यायवाची शब्द हैं। संस्कृति और सदाचार उसकी बाह्य अभिव्यक्तियां हैं।

अहंकारपूर्ण जीवन का छोड़ देना ही त्याग है और वही सौन्दर्य है।

हृदय की शुद्धता है अपने-आपको सांसारिक पदार्थों की आसक्ति से अलग पृथक् रखना। त्याग का अर्थ इससे रंचमात्र कम नहीं।

त्याग के भाव को ग्रहण करो और जो कुछ प्राप्त हो उसे दूसरों पर प्रकाशित करो। स्वार्थपूर्ण शोषण मत करो। ऐसा करने से आप अवश्य ही उज्ज्वल हो जाएंगे

कामना से रहित कर्म ही सर्वोत्तम त्याग अथवा पूजन है।

—स्वामी रामतीर्थ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वास्थ्य के लिए

भुजंगासन

भुजंगासन का दूसरा नाम सर्पासन है। इस आसन की आकृति फन फैलाकर उठाए सांप जैसी होने के कारण इसको सर्पासन कहते हैं।

विधि—सर्वप्रथम दोनों पांव मिलाकर टांगे सीधी करके, पेट के बल पर सो जाएं। पांव के दोनों अंगूठों को खैंचकर रखें। हाथ माथे की ओर लम्बावें। पांव के अंगूठे, नाभि, छाती, कपाल और हाथों के तलवे जमीन पर एक लेवल में रखें। हाथों को धीरे-धीरे कमर की ओर ऐसे ले जावें; जैसा चित्र में बताया गया है। उसके पश्चात् माथा और छाती पीछे की ओर बिल्कुल धीमी गति से ले जावें। नाभि का स्थान जमीन पर रहे। शरीर का सारा वजन हाथों के पंजों पर ही रहे। सिर को जितना हो सके पीछे ले जाने की कोशिश करें। शरीर की स्थिति कमान जैसी बन जाएगी और त्रिकास्थि (Sacrum) रीढ़ की हड्डी के अन्तिम भाग पर सारा दबाव केन्द्रित होगा। उस समय दृष्टि को ऊपर छत की ओर स्थिर रखें।

प्रथम यह स्थिति २० सेकण्ड तक रखें। उसके पश्चात् धीरे-धीरे सिर को जमीन की ओर ले जावें। पहले छाती जमीन पर रखें उसके पश्चात् सिर को जमीन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से लगावें। आसन सिद्ध हो जाने पर, आसन करते समय श्वांस भरकर कुम्भक करें और आसन को छोड़ते समय जब मूल स्थिति में आवें उसके बाद श्वासों को बहुत ही धीरे-धीरे छोड़ें।

लाभ

छीरंड संहिता में भुजंगासन के लाभों का उल्लेख निम्न प्रकार आया है—

देहाग्निर्वर्द्धते नित्यं सर्वरोगविनाशनम्।
जागर्ति भुजंगीदेवी साधनात् भुजंगासनम्॥

अर्थात्—"भुजंगासन से जठराग्नि प्रदीप्त होती है। सब रोगों का नाश होता है और कुंडलिनी का प्रबोध होता है।"

इस आसन के करने से ट्रेपजस (Trapezus), लेटीसीमस डोर्सी (Latissimus dorsi), इरेक्टर स्पाईन (Erector Spinae) और ग्लुटीयमस मल्स (Gluteal-muscles) का tone और रीढ़ की हड्डी के गर्दन वाले भाग में आए हुए, सर्वीकल (Cervical) ऊरोगुद्धा में आए हुए थोरेसिक (Thoracic), ऊदरगुहा में आए लम्बर (Lumber) और त्रिकास्थि (Sacrum) अन्तिम भाग कान की तरह मुड़ता जाता है। जिससे वहां के एक-एक मणके को और स्नायुओं (Ligaments) को बड़े पैमाने पर खून पहुंचता है। परिणामस्वरूप नाड़ी-तंत्र न सिर्फ चेतन बनता है; परन्तु चिरंजीवी, शक्तिशाली और सुदृढ़ बनता है। खास करके मगज में से निकलने वाली ज्ञान-तन्तुएं बलवान बननी हैं। पीठ की हड्डी में रहने वाली तमाम खराबियां दूर हो जाती हैं। पेट कीस्नायुएं रेकटी मसल्स (Rectimuscles) खिचने से वहां के अवयवों को शक्ति मिलती है। ऊदरगुहा में दबाव (Intrabdominal Pressure) बढ़ने से कब्जियत दूर हो जाती है। छाती और पीठ की तमाम खराबियां दूर होकर उनका विकास होता है। ऊरू गुद्दा के विकास से फेंफड़े को पर्याप्त लाभ होता है। गर्भाशय और बीजाशय को ठीक करता है। जिसके कारण 'मासिक' बिना कष्ट के आता है। "मासिक धर्म" सम्बन्धी सब शिकायतें दूर हो जाती हैं। गर्भवती स्त्रियां यह आसन न करें अतिश्रम करने पर जो थकावट होती है, वह दूर हो जाती है। भोजन करने के पश्चात् जो वायु का दर्द (Ftatulence) आदि दूर होता है। सारे शरीर में स्फूर्ति आती है। कफ-पित्त वालों के लिए वह आसन लाभदायक है। इस आसन के करने से हृदय मजबूत बनता है।

—योगेश्वर
आचार्य गुरुकुल टंकारा (गुजरात)

जुलाई, १९६८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(पृष्ठ १८ का शेष)

क्योंकि बुराई से बुराई जीती नहीं जाती, बल्कि नेकी से नेकी निकलती है, जैसे आग में आग डालने से आग बढ़ती है कम नहीं होती। जब तक यह गुण मनुष्य में नहीं आते, तो न वह स्वयं मनुष्य बनता है और न दूसरों को एवं अपनी सन्तान को ही मनुष्य बना सकता है अर्थात् संसार सुधर नहीं सकता। न ही संसार में सुख शान्ति अधिक काल तक आ सकती है—न प्रभु भक्ति ही बनती है, क्योंकि इन गुणों का प्राप्त करना ही प्रभु-भक्ति है।

इन उपरोक्त प्राकृतिक अथवा ईश्वरीय नियमों को जानना और उनके अनुकूल जीवन व्यतीत करना ही सुखप्राप्ति के साधन हैं।

—चिरंजीलाल वानप्रस्थी

दीपमाला के पावन पर्व पर

"जन-ज्ञान"

सगर्व भेंट कर रहा है

भारतेन्द्रनाथ साहित्यालंकार के संरक्षण में प्रकाशित

वैदिक-सिद्धान्त—अंक

महान् लेखकों की महान् रचनाओं से सुशोभित विशेषांक को भारी संख्या में मंगाने के लिए

आज ही अपना आदेश भेजिएगा

मूल्य एक प्रति ८० पैसे। ७) के १०। १४) के २५। २६ के ५०। ५०) के १००।

जिनका धन ३० अगस्त तक हमारे पास पहुंच जाएगा उन्हें ही इस रियायती रेट पर अंक भेजा जाएगा—

व्यवस्थापक

"जन-ज्ञान", १५९७ हरध्यानसिंह रोड

करौलबाग नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आपके लिए महाराणा द्वारा प्रस्तुत—

पोरबन्दर में बने हुए कपड़े

नए, आकर्षक डिजाइनों और रंगों में

सौराष्ट्र का एक छोटा-सा कस्बा जो कि उम्दा कपड़ों का घर है, वहीं पर बनते हैं कई तरह के बढ़िया महाराणा कपड़े···रंग और चमक-दमक में परम्परागत, परन्तु डिज़ाइन और बुनावट में नवीन, बिल्कुल नवीन !

कई तरह के महाराणा कपड़ों में से अपनी पसन्द का खरीदिए··· आधुनिक रंगों और डिज़ाइनों का अनोखा मनमोहक मिश्रण ! हमारे ठण्डे और शानदार सूती कपड़े भी देखना न भूलिए । हर तरह के वस्त्र और हर अवसर के उपयुक्त, आकर्षक और रंग-बिरंगे कपड़े ।

हर तरह के वस्त्रों के लिए कपड़े—साड़ियां, शर्टिंग, सूटिंग

अपने स्थानीय विक्रेता से खरीदिए महाराणा—पोरबन्दर में बने हुए कपड़े

महाराणा मिल्स

पोरबन्दर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

For All Your Needs In Clothing

Lovely	**Soft**	**Fine**
SAREES	**MALMAL**	**LONG CLOTH**
Choicest	Durable	Various
DHOTIES	SHIRTINGS	BEDSHEETS

Rajabahadur Motilal Poona Mills Limited

Makers of Fine, Attractive, Vivid, Lovely, Durable, Quality Cloth. Reasonable rates to satisfy all needs and demands. TRY ONCE.

Meet or Write to :

The Rajabahadur Motilal Poona Mills Limited

Managing Agents :

Mukundlal Bansilal & Sons

Hamam House, Hamam Street,
Fort, Bombay 1.

Telephone : $\frac{25567}{3837}$ **BOMBAY—22451 POONA**

Telegraphic Address : RAMOPOON—**BOMBAY**
Telegraphic Address : SILKO—**POONA**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

System of Education

Based on Satyarth Prakash (Chapter II)

—Ganpat Rai Talwar.

●

All human activities, pertaining to the individual society or the state, must needs have a planning to be really successful. Every Govt. has a planning commission for the purpose. Of all subjects that come under its purview, planning of the future generation of citizens is the most important and basic as a matter of fact.

To tackle with the subject properly, one must understand the two factors that help in the formation of a human being. These factors are the **Nature** and the **Nurture**. Without entering the philosophy of the past and the future lives of the beings, it is undeniable that every human being brings within-self some gifted or endowed qualities that are at once personal.

Children of the same parents brought up under the same type of atmosphere have different temperaments, different degrees of intellectual and mental stamina, not entirely due to heredity but something entirely personal. There are instances here and there of musical, mathematical prodigies, gifts which are not visible in the parents or even hereditary tendencies. These are natural to the Individual but development thereof is of course due to the nature that is available to them in the family or elsewhere.

The nurtural part is provided by the mother, father and preceptor or preceptors that the society or the state provide for the education of the members of the Society.

How fortunate is the lot of those who are born in a family where mothers and fathers are educated and of sterling character, who by example and precept lead them on to the stage from where good teachers continue their education.

This also is undeniable that the education of the child begins with the conception and formation of the body of the child in the mother's womb or even earlier in the physically and morally healthy young persons who constitute the parentage of the child and in due course help in the production thereof.

The seers of the Indian culture have elaborated a system which if closely followed is bound to help in the growth of a healthy progeny. It will not be out of place to mention the three stages of the said system. The fundamental idea behind everything, however, is that sex is provided by the nature for the conti-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

nuity of the race and not for lustful indulgence.

First Stage

Mating must be confined to the 12 days, four days after the menstruation period and not later than the 16th day.

Second Stage

When conception has taken place mating shall cease till after one year of the conception. Indiscriminate mating during conception leads to very many troubles both for the mother and the coming child, both physical and mental.

Third Stage

The carrying mother must become the focus of all that cultural training that it is proposed to be given to thc coming generation.

From the birth till the age that the child is handed over to an Educational Institution the parents have to look after the child most jealously regarding his health, habits and general behaviour.

Many a good precepts committed to memory at this age help definitely in the formation of a child's character. Truth, Will Power, Freedom from fear of all sort must be ingrained in his very nature.

The parents and the teachers or professors by their personal conduct and proper care bestowed on the training of the child help very much in the training of the child. If need be, punishment at the proper juncture for any serious fault must be resorted to in the interests of the future good of the child.

The Educational Institutions must look after the moral training of the children, boys or young men, as they develop in due course, in addition to the technical training that the Institutions cater for. The Institutions have to be secular in the interests of justice and equality for all, but the moral principles which are common to all religions must form the curriculum of all such training.

Every student must be made to realise that they have to be men first before any thing else.

As it is said :

Wanted men
Not systems fit and wise
Not faiths with rigid eyes
Not wealth in mountain piles
Not power with gracious smiles
Not even potent pen
Wanted men.

MY BODY

Seven Rishis (Touch, Sight, Hearing, Taste, Smell, Mind and Intellect) are established in the body ; these seven guard it with unceasing care. These seven enter the soul in the body of him who lies asleep. At that time two sleepless gods (inbreath and outbreath—Pran and Apan), the protectors of soul, keep waking.

Yajur 34.55

मुद्रक और प्रकाशक श्रीमती राकेश रानी द्वारा रायसीना प्रिंटरी, दिल्ली में मुद्रित और जन-ज्ञान कार्यालय, नई दिल्ली-५ से प्रकाशित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हरिनगर शुगर मिल्स

लिमिटेड

की

बनी हुई शुद्ध और सर्वोत्तम

चीनी

पो० आ० HARI NAGAR (चम्पारन)

रेलवे स्टेशन—हरिनगर (एन. ई. रेलवे)

हैड ओफिस

कालबा देवी रोड, बम्बई-२

मिल ओफिस—HARI NAGAR SUGAR MILLS

चम्पारन (बिहार)

Dr. Vivek Arya Vedic Libra... Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि दयानन्द की जन्म-स्थली टंकारा का सन्देशवाहक

Regd. No.
D 1631

१५ जुलाई, १९६८

जन-ज्ञान (मासिक)

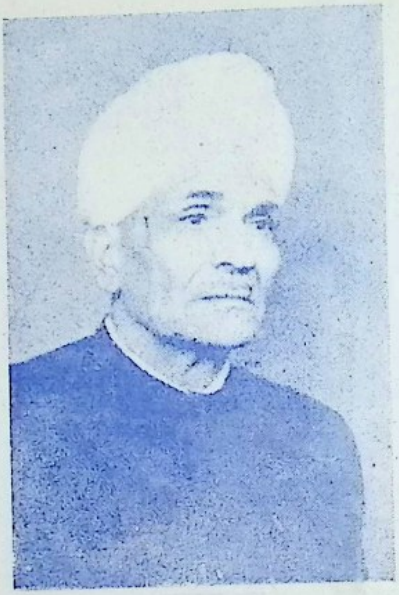

दिल्ली के प्रसिद्ध आर्य नेता

श्री ला० दीवानचन्द जी

आप आर्य समाज की गतिविधियों के केन्द्र बिन्दु, वृद्ध होने पर भी युवकोचित उत्साह के धनी, उदार, शांतिप्रिय और कर्मठ आर्य हैं। आर्य समाज पटेल नगर नई दिल्ली के प्रधान, टंकारा ट्रस्ट के कार्यकर्ता प्रधान व अनेक संस्थाओं के संचालक हैं।

"जन-ज्ञान" का प्रकाशन आपकी प्रेरणा का सुखद परिणाम है। आपकी स्नेह भावना और आशीर्वाद सदा ही हमें प्राप्त होता रहा है आर्य जगत को आपसे बड़ी आशाएं हैं।

—संपादक

गाजियाबाद के पुराने आर्य

पं० रामचरण जी शर्मा

सीधे-सादे सरल, आधुनिक छल-कपट से दूर, कठिन श्रम के साधक और गाजियाबाद के पुराने आर्य कार्यकर्ता पं० रामचरण शर्मा अपनी सत्यप्रियता के कारण सर्वत्र विख्यात हैं।

गाजियाबाद आर्य समाज के अनेक पदों पर रहे किन्तु कभी पदों से मोह नहीं किया। वृद्ध होते हुए भी निरंतर कार्य करते रहना आपका स्वभाव है। आपने जन-ज्ञान का आजीवन सदस्य बनकर हमें आशीर्वाद भेजा है—धन्यवाद —संपादक

मु...

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi